CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

9.2 ½

भोजपुरी साहित्य का संक्षिप्त परिचय

एवं

भोजपुरी का प्रकाशित साहित्य

सम्पादक

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

प्रकाशक

भोजपुरी परिवार, पटना-३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रथम संस्करण सं० २०२७

स्वत्वाधिकार :
पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

दाम :
एक रुपया

मुद्रक :
ईंकार प्रेस, न्यू मार्केट, पटना—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

भोजपुरी भाषा के अनन्य प्रेमी

तथा

कवि की कोमल भावनाओं और मानवीय सदाशयता

के

प्रतीक

श्री शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्द्धन'

अधीक्षण अभियन्ता,

लोक निर्माण विभाग, बिहार

के

कर-कमलों में

भोजपुरी परिवार, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सम्पादक की ओर से दो शब्द

बिहार सरकार के अनुवाद विभाग में विधि-विशेषज्ञ-समिति के सदस्य होने के नाते, पारिभाषिक शब्दों के क्षेत्र में काम करने का मौका आज करीब १५ वर्षों से मिल रहा है। कहीं-कहीं पारिभाषिक शब्दों की गढ़न में क्षेत्रीय भाषाओं से बहुत सहायता मिलती और यह कार्य करते--करते भोजपुरी भाषा-साहित्य और उसके शब्द भंडार की ओर मेरा ध्यान गया। तभी से भोजपुरी की गरिमा और इसके विस्तृत साहित्य की छानवीन मैं करने लगा। अनेक शब्द रत्नों के ढूँढ़ने और उनकी जानकारी का मौका मिला।

इस बीच सन् १९५९ में स्व० आचार्य शिवपूजन सहाय जी की प्रेरणा से 'भोजपुरी परिवार' की स्थापना हुई जिसके प्रमुख स्तम्भ श्री 'अशान्त', श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी,, श्री सीतारामशरण 'राम', श्री विष्णुदत्त मिश्र इत्यादिक थे। स्व० आचार्य की छत्रछाया में भोजपुरी के त्रैमासिक 'अँजोर' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। स्व० आचार्य ने तीन वर्षों तक अनवरत परिश्रम 'अँजोर' का सम्पादन करके हमलोगों के भविष्य का पथ-प्रदर्शन किया। अँजोर' का जो स्तर उन्होंने कायम कर दिया उसके यथाशक्ति निर्वाह का प्रयास हमलोग अभी भी कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि जिसके रोम-रोम में भोजपुरी के प्रति अनुराग और श्रद्धा भरी थी ऐसे स्व० शिवजी की अमर आत्मा अभी भी हमारा पथ-प्रदर्शन कर रही है और करती रहेंगी।

'अँजोर' के प्रकाशन ने भोजपुरी भाषा साहित्य में एक क्रान्ति पैदा कर दी। देश-विदेश के सभी नामी गरामी भाषा विज्ञान के शास्त्रियों ने इसका हृदय से स्वागत किया और वे मुझे इस पुनीत कार्य में प्रोत्साहित करने लगे। भोजपुरी के विश्रुत विद्वान और साहित्य-सेवी स्वयं मेरे यहां आकर अपना स्नेह, दुलार और प्रोत्साहन ही नहीं, वरन् सक्रिय सहयोग भी देने लगे। उनमें स्व० महापंडित राहुल सांकृत्यायन (जो उन दिनों लंका में थे), श्री गणेश चौबे एवं श्री सम्पूर्णानन्द जी, श्री महेन्द्र शास्त्री, डा० परमेश्वरी लाल गुप्त,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रासबिहारी राय शर्मा, श्री रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', प्रि० मनोरंजन इत्यादिकों का नाम मैं नहीं भूल सकता जिन्होंने प्रारम्भ में अनजान पथ पर मार्गदर्शक बनकर मेरा पथ-प्रदर्शन किया जिसके फलस्वरूप आज ११ वर्षों से 'अंजोर' ने भोजपुरी की जो सेवा की या कर रहा है, स्पष्ट है।

मैंने ११ वर्षों के सम्पादकीय जीवन में इस पथ पर कितने कंटकाकीर्ण स्थलों को लांघ कर पार किया इससे भी लोग परिचित हैं। लोकभाषा की पत्रिका और साहित्य का प्रकाशन कोई हँसी-खेल नहीं है। अर्थ का अभाव, अच्छे-अच्छे लेखों का अभाव अपनी पारिवारिक और पेशे की परिस्थिति अभी भी मुझे बार-बार भोजपुरी साहित्य से तटस्थ होने को मजबूर कर रही है। परन्तु जो बोली माँ के दूध के साथ घोल कर पिला दी गयी, और जिस पृथ्वी पर माँ के गर्भ से मैं गिरा, उसका मोह नहीं जाता और आज भी किसी न किसी तरह भोजपुरी के चरण निरन्तर आगे बढ़ाने की चेष्टा में ही हूँ। भोजपुरी बन्धुओं से कई बार विनम्र अपील कर चुका हूँ, परन्तु इसका कोई परिणाम न हुआ। खैर जब तक शक्ति है, भोजपुरी की सेवा करता रहूँगा; सेवा से विरत होना तो मात्र क्षण भर का काम है और वह भी सहज गति से।

'अँजोर' के प्रकाशन काल में आदरणीय श्री गणेश चौबे जी से मैंने कई बार यह आग्रह किया कि भोजपुरी साहित्य के ग्रन्थों की एक मुद्रित सूची तैयार हो जानी चाहिये जिसकी चर्चा चौबे जी ने 'अँजोर' की कला—४ किरण ३-४ की पृष्ठ संख्या ४६ पर की है। यों तो भोजपुरी के अनेक साहित्यकार हैं परन्तु चौबेजी को ही लोग भोजपुरी साहित्य का प्रतिनिधि मानते आ रहे थे और वह उचित भी था। उन्होंने मेरे आग्रह को स्वीकार किया और भोजपुरी की मुद्रित साहित्य की सूची 'अँजोर' में प्रकाशित होने लगी। थोड़ा बहुत मेरा भी सहयोग उनमें है परन्तु वह नहीं के बराबर ही है। सूची बिलकुल आधुनिक साहित्य तक पहुँच गयी है।

'अँजोर' के प्रकाशन काल में देश विदेश की अनेक साहित्यिक संस्थाओं एवं विद्वानों के खोजपूर्ण पत्र आने लगे। रूस के प्रसिद्ध विद्वान श्री चेर्निशोव ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कई पत्र लिख कर 'अँजोर' के अंक मँगाया। पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय के जॉन आरवकल साहब, जो आजकल पटने में आये हुए है, भाषा विज्ञान के एक माने जाने विद्वान हैं। वे जनवरी में ही 'अँजोर' के ग्राहक बन गये। वे भोजपुरी, मगही एवं हिन्दी का तुलनात्मक अध्ययन कर रहे हैं। 'अँजोर' से उन्हें प्रचुर मात्रा में सहायता मिली। अभी हाल में भोजपुरी लोक-गीतों पर पी. एच. डी. की थीसिस लिखनेवाली श्रीमती जातिका देवी एक स्वीस महिला ने भी हमारी सहायता माँगी। 'अँजोर' और भोजपुरी साहित्य से उनका परिचय करा दिया गया और वे आजकल पटने में ही अपना अनुसंधान कार्य कर रही हैं। मॉरिशस के भोजपुरी भाई भी 'अँजोर' से लाभ उठा रहे हैं। गोमा के बन्धु भी भोजपुरी पर काम कर रहे है।

राष्ट्रभाषा परिषद् बिहार ने हमारे शब्दकोश, मुहावरा कोश, और कहावत कोश का काफी सम्मान और प्रयोग किया। ओसमानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद से अँजोर का अँक मँगाकर लोग अपना कोश तैयार कर रहे हैं। काशी नागरी प्रचारिणी सभा बड़े चाव से 'अँजोर' को अपने यहाँ स्थान दे रही है। अभी तक तीन पी. एच. डी के छात्रों को भोजपुरी परिवार और 'अँजोर' से साहित्यिक सहायता दी गया है। अँजोर के प्रकाशन काल में कई भोजपुरी संस्थायें बनी और अनेक लेखक, कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, निबन्ध लेखक प्रकाश में आये। जो प्रोत्साहन चाहते थे उन्हें उचित प्रोत्साहन दिया गया।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर मैंने यह विचार किया कि भोजपुरी साहित्य के मुद्रित ग्रन्थों की एक सूची पुस्तकाकार तैयार हो। इस सूची में भोजपुरी के प्रायः सभी अंगों का प्रतिनिधित्व हो चाहे उसकी संख्या भले ही कम हो। भोजपुरी साहित्य कितना विशाल है उसकी भूमिका इस सूची से मिल जायगी। हमलोगों ने सन्तों की भोजपुरी साहित्य की कृतियों को सूची में नहीं रखा है इसलिए कि उसकी सूची विशाल है। उसके लिए एक अलग संग्रह तैयार हो तो उचित होगा।

भोजपुरी भाषा को मान्यता इस वर्ष मिलने को थी परन्तु कुछ कारणों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

से न मिल सकी। सात करोड़ भोजपुरी भाषा-भाषियों का यह साहित्य आज विशाल रूप धारण कर रहा है और राष्ट्रभाषा को समृद्ध बनाने में सतत प्रयत्नशील है।

इस सूची का सारा श्रेय श्री चौबे जी को है, जिसके लिए समस्त भोजपुरी भाषा-भाषी उनके ऋणी रहेंगे। इस पुस्तक को तैयार करने में मेरे कुछ मित्रों और भोजपुरी परिवार के सदस्यों जैसे श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी (सह--सम्पादक अँजोर), श्री सीतारामचन्द्रशरण 'राम', श्री धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल', श्री जगन्नाथ इत्यादिकों ने मेरी जो सहायता प्रेस कापी तैयार करने में की है उसके लिए मैं उनका आभार मानता हूँ।

कुछ लोग ऐसा कह सकते हैं कि इस सूची के प्रकाशन में हिन्दी को इतनी प्रमुखता क्यों दी गयी। उनसे मेरा नम्र निवेदन यह है कि हिन्दी के दामन को छोड़कर कोई भी लोकभाषा, स्वतन्त्र रूप से आगे नहीं बढ़ सकती है। इस संग्रह को भोजपुरी, अभोजपुरी, देश विदेश के अन्य भाषाओं के विद्वानों तक पहुँचाना है इसलिये हिन्दी का आश्रय लिया गया है। स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बगला में गीतांजलि लिखी, परन्तु विश्व ने उसे तब जाना जब वह एक सशक्त भाषा यानी अंग्रेजी का दामन पकड़ कर विश्व सहित्य के बीच खड़ी हो गयी। उसका क्या आदर हुआ और है इससे विश्व के सभी विद्वान परिचित हैं। भोजपुरी और हिन्दी में अधिक अन्तर नहीं, फिर जहाँ आवश्यकता पड़ेगी अपनी गाड़ी के पहियों की धूरी में हम हिन्दी के मसाले का प्रयोग करेंगे इसके विषय में किसी को किसी प्रकार का भ्रम नहीं होना चाहिए। आज हम हिन्दी को समृद्ध बनाने के लिए भोजपुरी का साहित्य-भंडार खोल रहे हैं। हिन्दी भी भोजपुरी को अपने पार्श्व में स्थान दे रही है।

आशा है इस मुद्रित सूची से साहित्यकार अधिक से अधिक लाभ उठावेंगे और तभी मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

सूची के साथ भोजपुरी साहित्य का प्रारम्भिक एवं एक संक्षिप्त इतिहास भी दिया जा रहा है।

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बिहार में भोजपुरी का प्रारम्भिक रूप

—डा० बजरंग वर्मा

हिन्दी साहित्य के विकास में बिहार का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक अनुसंधानों के परिणामस्वरूप ज्यों-ज्यों साहित्य के अज्ञात पृष्ठ प्रकाश पाते जा रहे हैं, त्यों-त्यों इस उक्ति की सार्थकता चरितार्थ होती जा रही है।

बिहार में लिखित साहित्य की प्राचीन परम्परा की खोज सबसे पहले मिथिला में आरम्भ हुई जिसके कारण मैथिली की प्राचीन रचनाएं साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान पा चुकी हैं। गत दो दशकों से बिहार के भोजपुरी-भाषी क्षेत्रों में भी प्राचीन साहित्य की खोज एवं रक्षा के प्रयत्न होने लगे हैं।

अब तक हिन्दी के जिस सबसे प्राचीन साहित्यकार का हमें पता चला है वे हैं ईशानचन्द्र, जो सातवीं शती में हुए थे। बाणभट्ट के परम मित्र होने के कारण ये शाहाबाद के सोन नदी के पश्चिमी तट पर 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम के आसपास किसी ग्राम के निवासी होंगे ऐसा अनुमान किया जाता है। ईशानचन्द्र की काव्य-रचनायें हमें अभी तक देखने को नहीं मिलीं। किन्तु यह निश्चित रूप से ज्ञात हुआ है कि इन्होंने लोक-भाषा में अपनी रचनाएं की थीं। हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं कि शाहाबाद का तत्कालीन लोक-भाषा में लिखित ये रचनाएं हमें उपलब्ध हो जायें। वस्तुतः उनकी उपलब्धि के पश्चात ही बिहार में भोजपुरी साहित्य की प्राचीनता की वास्तविक सीमा निर्धारित की जा सकेगी।

हिन्दी में जो सबसे प्राचीन साहित्य उपलब्ध होता है, वह वज्रयानी बौद्धसिद्धों का साहित्य। इन सिद्धों में भी अधिकांश बिहार के ही निवासी थे—कई तो भोजपुरी क्षेत्र के थे। उदाहरणार्थ, नवीं शती के 'चपंटीपा' और ग्यारहवीं शती के 'चम्पकपा' चम्पा नामक स्थान के निवासी बतलाये गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

राहुलजी ने चम्पा को भागलपुर के अन्तर्गत स्थित किया है, किन्तु पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उस शहर को आधुनिक चम्पारन का प्राचीन रूप माना है। यदि द्विवेदी जी का अनुमान ठीक है तब ये सिद्ध भी भोजपुरी-क्षेत्र के ही सिद्ध होते हैं। नवीं शती के ही एक सिद्ध थे चौरंगीपा जो शालिवाहन के पुत्र कहे गये हैं। राहुल जी इन्हें मगह का निवासी बतलाया है। डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इन्हें स्यालकोट, पंजाब का निवासी बतलाते हैं। किन्तु शाहाबाद जिला के भभुआ के निकट चैनपुर-ग्राम में राजा शालिवाहन के महल के भग्नावशेष अभी तक वर्तमान हैं उनके 'सिंह-द्वार' पर उक्त राजा के पुरोहित 'हरसूब्रह्म' का प्रसिद्ध मन्दिर आज भी खड़ा है। चौरंगीपा इसी शालिवाहन के पुत्र थे। कहते हैं, चौरंगीपा की दूसरी माँ ने उनके हाथपाँव कटवा डाले थे इसी कारण, ये चौरंगीपा कहलाने लगे। यों पहले इनका नाम था 'पूरन भगत'। भोजपुरी में आज भी लूले लगड़े को 'चौरंगी' ही कहते हैं। अतः यह अनुमान दृढ़ होता है कि ये भी भोजपुरी-क्षेत्र के ही निवासी रहे होंगे। इनकी रचनायें जो प्राप्त हुई हैं, उनमें भी भोजपुरी का ही रंग गाढ़ा है। आचार्य द्विवेदी जी ने पिण्डी के जैन-ग्रन्थ भाण्डार में सुरक्षित 'प्राणसंकली' नामक इनकी एक पुस्तक की चर्चा की है। यदि वास्तव में यह इनकी ही पुस्तक है तब तो स्पष्ट ही इन्होंने भोजपुरी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। 'बोलीला', 'भइला सनमुख', 'देखीला' 'नमाइला माथा', आसिरवाद पाइला', 'भइला हरखित', 'पुछीला' आदि प्रयोग तो भोजपुरी में आज भी प्रचलित हैं।

इसी प्रकार, बारहवीं शती के 'कोकालिपा' भी चम्पारन के निवासी बतलाये गये हैं।

जो हो, अपभ्रंश भाषा में सिद्धों की जो रचनायें मिली हैं, उनमें भोजपुरी के अनेक ऐसे शब्द बिखरे पड़े हैं जिनका प्रयोग भोजपुरी भाषी जनता आज भी उसी रूप में करती है। वास्तव में भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि में आज जितना भाषागत भेद दीखता है, उतना प्राचीन काल में नहीं था। अब दिन-पर-दिन यह भेद और बढ़ता ही जायगा, क्योंकि वर्तमान वैज्ञा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

निक युग में नवीन अनुसंधान के परिणाम स्वरूप सभी भाषायें अपना-अपना रूप सँवारने में तत्पर हो रही हैं। चौदहवीं शती में मिथिला के ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्ण-रत्नाकर' और उमापति उपाध्याय एवं महाकवि विद्यापति के पदों तक यह प्रवृत्ति स्पष्ट दीख पड़ती है। उक्त रचनाओं मे अन्य विहारी भाषाओं के शब्दों के साथ भोजपुरी के अनेक शब्द प्रयुक्त हुए है। उदाहरण के लिए ज्योतिरीश्वर-कृत वर्ण-रत्नाकर ही ले लीजिए। सरोवर कैसा है ? लेखक कहता है—

"शरदक चाँद अइसन निर्म्मल-बौद्धपक्ष अइसन आपात भीषण-उदयनक सिद्धान्त अइसन प्रसन्न -यौगिक चित्त अइसन सौम्य-हरिश्चन्द्रक त्याग अइसन अगाध सरोबर देषु।"

इसके पश्चात् सोलहवीं शती में सारन जिले के 'नैनी' ग्राम निवासी 'सविता' और 'कबिता' नामक कवियों का पता चलता है जिन्होंने भोजपुरी में काव्य रचनाएं की थीं। दुर्भाग्यवश हमें इनकी रचनायें उपलब्ध नहीं होतीं। कहते हैं गोरखपुर के मझौली राज्य में अपनी भोजपुरी-कविताओं के चलते सविता का बड़ा आदर था। उक्त मझौली के राजा भीमक ने इन्हें सारन जिले में 'नैनी' नामक ग्राम दे दिया था, जहाँ ये बस गये थे।

सत्रहवीं शती विहार में भोजपुरी-साहित्य के लिए बड़ा महत्वपूर्ण काल है। इसमें एक ओर जहाँ अकस्मात् भोजपुरी गद्य का पूर्ण विकसित रूप देखने को मिलता है वहाँ दूसरी ओर प्रौढ़ काव्य साहित्य के भी दर्शन हमें होते हैं। शाहाबाद के परमार उज्जैन राजाओं द्वारा विभिन्न अवसरों पर प्रकाशित राज्याज्ञाओं, सनदों, दानपत्रों और दस्तावेजों में जो कुछ उपलब्ध हुए हैं उनमें पूर्ण विकसित विशुद्ध भोजपुरी गद्य का प्रयोग मिलता है। इस काल के काव्य-साहित्य में तो भोजपुरी की प्रौढ़ता एवं उसके परिष्कार को देखकर आश्चर्य-चकित रह जाना पड़ता है। शाहाबाद के धरकन्धा-ग्राम निवासी दरिया साहब और सारन-जिले के माँझी ग्राम-निवासी धरणीदास जी, इन दो प्रसिद्ध संत-कवियों का आविर्भाव इसी काल में हुआ था। इन दोनों की खड़ी बोली मिश्रित सधुक्कड़ी भाषा में जो-जो रचनाएँ मिली है, उनमें भोजपुरी का रंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गहरा है। विशुद्ध भोजपुरी में रचित इनकी जो रचनाएं उपलब्ध हुई हैं, उनमें तो पर्याप्त प्रौढ़ता एवं परिष्कार के दर्शन होते हैं। देखिये, धरणीदास जी की निम्नांकित पंक्तियों में भोजपुरी का कितना प्रौढ़ एवं विकसित रूप देखने को मिलता है—

'पाव दुवो पउआ परम झलकार।
                    झुरहुर श्याम तन लाम लहकार।
लँमहरि फेंकिया पतरि करिहाँव।
                    पिअरि पिछौरी करि करते न आव।
चंदन खोरिया भरेला सब अंग।
                    धारा अनगनित बहेला जनु गंग।
माथे मनि मुकुट लकुट सुठि लाल।
                    झीनवा तीलक सोभे तुलसी के माल।
नीक नाक पतरि ललौहिं बड़ि आंखि।
                    मुकुट मझोर एक मोरवा के पाँखि।
कान दुनों कुंडला लटक लट झून्ह।
                    दाढ़ी मोछ नूतन जैसन मखतूल।
परफुलित बदन मधुर मुसकाहि।
                    ताहि छवि उपर धरनि बलि जाहि।
मन कैला दंडवत भुंइयाँ धरि सीस।
                    माथे हाथ धरि प्रभु देलन्हि आसीस॥

सत्रहवीं शती तक जिन बिहारी साहित्यकारों का हमें ज्ञान है, उनमें धरणीदास जी ही प्रथम साहित्यकार हैं जिनकी भोजपुरी कविताओं में इतनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रौढ़ता कि दर्शन हमें होते हैं। उनकी इस कोटि की रचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकि पूर्व भी विहार में बहुत दिनों से भोजपुरी में काव्य-रचनाएँ होती थीं अन्यथा उसमें अकस्मात् इतनी प्रौढ़ता, इतना निखार और परिष्कार क्योंकर पाया जाता। व्रजभाषा में सूरदास और मैथिली में उमापति तथा विद्यापति कि पदों को देखकर विद्वानों ने ऐसा ही अनुमान किया है।

सत्रहवीं शती कि पश्चात् विहार में भोजपुरी साहित्य की एक प्रकार से क्रमबद्ध परम्परा उपलब्ध होती है।

★

आरा के पं० सदल मिश्र जी की लिखी हुई कई दस्तावेज़ें भोजपुरी में मिला हैं। एक, जिसकी तिथि सन् १८८५ पौष प्रतिपदा, मंगलवार है, 'अँजोर' की कला—१ किरण २ पृष्ठ ४ में प्रकाशित है।

शोधी विद्वानों कि अनुसार वेदों में भी भोजपुरी कि शब्द मिले हैं।

—सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोजपुरी : एक परिचय

—गणेश चौबे

भोजपुरी भाषा का नामकरण शाहाबाद जिले के भोजपुर नामक गाँव के ऊपर हुआ है। मालवा के परमार राजपूतों ने स क्षेत्र पर अपनी विजय के पश्चात् अपने पूर्वज राजा भोज के नाम पर इसे बसाया था। भाषा के अर्थ में 'भोजपुरिया' का उल्लेख सर्वप्रथम १७८९ ई० में पाया जाता है, जो काशी के राजा चेत सिंह के सिपाहियों की बोली के लिए आया है। सन् १८६८ ई० में जौन बीम ने भोजपुरी को हिन्दी की एक बोली बतलाते हुए अपना एक निबन्ध प्रकाशित कराया था। तब से लगभग सन् १९४० ई० तक इस भाषा का भोजपुरी नाम शोधी विद्वानों तक ही सीमित रहा। सन् १९४२ ई० में राहुल जी ने प्रान्तों के पुनर्गठन के प्रश्न पर यह विचार प्रकट किया था कि प्रान्तों का क्षेत्रीय भाषाओं के आधार पर गठन होना चाहिए और इसी क्रम में उन्होंने भोजपुरी भाषा को प्राचीन जनपदों के आधार मल्लिका और काशिका दो भागों में विभाजित किया था। मुजफ्फरपुर जिले के दक्षिणी और पश्चिमी छोर की भाषा को ग्रियर्सन ने भोजपुरी माना था, उसे राहुल जी ने 'वज्जिका' के अन्तर्गत रखा। इधर कुछ दिनों से बलिया की भाषा के लिए बल्लिका नाम भी सुनने में आ रहा है। लेकिन इन नामों में भोजपुरी को विभाजित देखने की भावना निहित है, अतः ये लोकप्रिय नहीं हो सके। जनपदीय आन्दोलन के फलस्वरूप पठित समाज में और भोजपुरी फिल्मों के निर्माण के पश्चात् सामान्यजनों में भी इस भाषा के भोजपुरी नाम का व्यापक प्रचार हुआ है। डा० ग्रियर्सन ने भोजपुरी को बिहारी भाषा की एक बोली मानते हुए इसे उत्तरी या सरवरिया, पश्चिमी या आदर्श और नागपुरिया, इन चार भागों में विभाजित किया है। चम्पारण की भोजपुरी को मधेसी की संज्ञा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दी है, किन्तु लेखक के मत में इसे पूर्वी भोजपुरी कहना उपयुक्त होगा। जनपीय आन्दोलन के पूर्व भोजपुरी के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं की भाषा को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया है। श्री दूधनाथ उपाध्याय ने अपनी रचनाओं को दोआबा की बोली की, मन्नन द्विवेदी ने सरवरिया हिन्दी की, रघुवीर नारायण ने प्रान्तिक भाषा की और चंचरीक ने उत्तरप्रदेश की ग्रामीण बोली की रचना की है। स्वर्गीय श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' ही ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होने सन् १९४७ ई० में प्रकाशित 'देहाती दुलकी' में इस बात का सर्वप्रथम स्पष्ट उल्लेख किया हैं कि यह भोजपुरी का कविता संग्रह है। वस्तुतः भोजपुरी भाषा के हित को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि विभिन्न क्षेत्रों की भोजपुरी को उस क्षेत्र पर आधारित किसी विशेष नाम से पुकारने की प्रवृत्ति को उत्साहित नहीं किया जाय।

भोजपुरी एक बड़े भूभाग की भाषा है, फिर भी इसमें लिखित साहित्य का अभाव है, ऐसी विद्वानों की धारणा है। स्व० डा० विश्वनाथ प्रसाद का अनुमान है कि यहां के पंडितों को काशी के पंडित समाज से सदा प्रेरणा मिलती रही है, फलतः उनके ग्रन्थ प्रायः संस्कृत में रचे गये। हो सकता है, इसमें कुछ तथ्य भी हो। किन्तु हमें ऐसा लगता है कि पंडित और मुन्शी घरानों तथा मठों में सुरक्षित ग्रन्थ संग्रहों का इस दृष्टि से विधिवत् निरीक्षण परीक्षण किया जाय तो भोजपुरी के अनेक प्राचीन ग्रन्थ प्रकाश में आ सकते हैं।

अब तक जो कुछ सामग्रियाँ हमें उपलब्ध हैं, उनके आधार पर हम भोजपुरी में साहित्य रचना की स्थिति पर विचार करेंगे। हमें भोजपुरी में सिद्धों एवं नाथ पंथी जोगियों की बानी 'निर्गुणवादी संतों के 'सबद' भक्तों एवं कथा वाचकों के पद, राष्ट्रीय आन्दोलन सम्बन्धी गीत लोकगीत एवं प्रकीर्ण लोक-काव्य काफी मात्रा में उपलब्ध है। भोजपुरी का लोक साहित्य बहुत विशाल है। इसके शब्दों की अभिव्यंजना शक्ति बड़ी प्रबल है। इस सम्बन्ध में डा० ग्रियर्सन, फैलन फ्रेजन, जौन क्रिश्चियन, होर्नले आदि यूरोपीय विद्वानों ने तथा डा० कृष्णदेव उपाध्याय, डा० सत्यव्रत सिन्हा, डा० इन्द्रदेव,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

डा० श्रीधर मिश्र, डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, डा० सत्यदेव ओझा, श्री दुर्गा शंकर सिंह 'नाथ', श्री वैजनाथ सिंह 'विनोद' और इन पंक्तियों के लेखक ने बहुत कुछ काम किये हैं। स्व० डा० विश्वनाथ प्रसाद, डा० उदय नारायण तिवारी एवं श्री रास बिहारी राय शर्मा, डा० शुकदेव सिंह तथा विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव ने इसकी ध्वनि एवं व्याकरण पर यथेष्ट काम किया हैं।

भोजपुरी साहित्य के प्रारम्भिक रूप की झाँकी हमें सिद्धों एवं नाथ पंथी जोगियों की बानियों में मिलती हैं। गोरखनाथ, डोम्भिपा, वामपा, महीपा, विरूपा, वीणापा, ताड़कपा, शबरपा आदि की रचनाओं को हम प्राचीन भोजपुरी की रचना कह सकते हैं। चौरंगीपा का 'प्राण संकली' नामक ग्रन्थ भोजपुरी गद्य में है। महाराज गोविन्दचन्द्र (बारहवीं सदी) के दरबारी पंडित दामोदर शर्मा के 'युक्ति व्यक्ति प्रकरण' में तत्कालीन बनारसी बोली का नमूना मिलता है।

भोजपुरी के संत कवियों में कबीर (१५ वीं सदी) को प्रमुख स्थान प्राप्त है। संप्रति कबीर के पदों का जो प्राचीनतम संग्रह उपलब्ध है, उस पर पंजाबी और राजस्थानी का प्रभाव नजर आता है। किन्तु उनके काशी निवासी होने के कारण उनके मूल पद भोजपुरी में ही रहे होंगे। डा० शुकदेव सिंह, हिन्दी विभाग, लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर ने अद्यतन उपलब्ध सामग्रियों के आधार पर अपने शोध प्रबन्ध में इस बात को सिद्ध कर दिया है कि बीजक की मूल भाषा भोजपुरी है। (यह प्रबन्ध अभी अप्रकाशित है) पदों की मौखिक परम्परा के कारण उनके विभिन्न प्रान्तों के शिष्यों ने उनमें हेरफेर कर दिया होगा, ऐसी प्रबल सम्भावना है। संभवतः इसी तथ्य को लक्ष्य कर कबीर ने कहा है :—बोली हमरी पुरब की, हमें लखे ना कोय।

हमको तो सोई लखै, जो पुरब का होय॥

कबीर के बाद धरनी दास (१७ वीं सदी) का स्थान आता है। संतों द्वारा पद रचना का क्रम आज भी जारी है और उनके कबीर पंथी, दरियादासी, शिवनारायणी, सरभंग और सखी संप्रदाय के संतों के ढेर के ढेर पद भोजपुरी में हमें प्राप्य हैं।

भारतेन्दु युग के हिन्दी साहित्यकारों का विचार था कि प्रचारात्मक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

साहित्य की रचना ग्रामीण बोलियों एवं छंदों में होनी चाहिये : फलतः उन्नीसवीं सदी कि नवें दशक के कवि दूधनाथ उपाध्याय ने गोरक्षा आन्दोलन के पदों की रचना भोजपुरी में की। देश में राष्ट्रीय आन्दोलन के विस्तार के फलस्वरूप सर्वश्री रघुवीर नारायण, मनोरंजन, अरविन्द एवं चंद्रीक आदि कवियों कि वहुत से पद भोजपुरी में पाये जाते हैं।

उन्नीसवीं सदी कि अन्तिम वर्षों में काशी कि तेग अली कि 'बदमास दरपन' और रामकृष्ण वर्मा 'बलवीर' के 'विरहा' ने बड़ी ख्याति पायी। सन् १६१९ ई० में मन्नन द्विवेदी कि भोजपुरी के सवैये वहुत प्रसिद्ध हुए। आधुनिक काल के कवियों में स्व० 'देहाती' जी अग्रणी रहे। उन्होंने सन् १६४० के आस-पास प्रांजल भोजपुरी में रचनाएँ कर सिद्ध कर दीं कि भोजपुरी में भी सुन्दर पद लिखे जा सकते हैं। आजमगढ़ के बिसराम के विरहें भी बड़े अनूठे हैं।

लगभग एक वर्ष हुआ, जब 'भोजपुरी परिवार' पटना कि संचालक एवं 'अँजोर' पत्र कि सम्पादक श्री पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय ने भोजपुरी कि प्रकाशित साहित्य की सूची तैयार करने का प्रस्ताव रखा तो मैंने अपने सीमित साधनों के कारण इस प्रस्ताव को बड़े संकोच कि साथ स्वीकार किया, यद्यपि ऐसी सूची की उपयोगिता निर्विवाद है और इससे भोजपुरी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों की अनेक भ्रान्तियो का निराकरण होगा।

भोजपुरी एक बड़े भूभाग की मातृभाषा है जिसका विस्तार बिहार और उत्तर प्रदेश के सोलह जिलो में, मध्यप्रदेश कि सुरगुजा, एवं नेपाल तराई के चार जिलों में हैं। भोजपुरी क्षेत्र में एक भी ऐसा पुस्तकालय नहीं, एक भी ऐसी दुकान नहीं जहाँ भोजपुरी की कुछ भी पुस्तकें एक साथ उपलब्ध हों। फलतः मुझे वहुत से ग्रन्थकारों, प्रकाशकों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों से पत्र द्वारा या व्यक्तिगत रुप से सम्पर्क स्थापित करना पड़ा और हिन्दी-भोजपुरी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों से भी इस सूची के लिए सामग्रियाँ संकलित करनी पड़ी हैं। इस गुरुतर कार्य में जिन-जिन साहित्य सेवियों, विद्वानों एवं संस्थाओं से मुझे जिस रूप में सहायता मिली है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। ग्रन्थों के रचयिताओं ने अपने-अपने ग्रंथ मेरे पास भेजकर इस कार्य में मेरी सहायता की है और इसके लिए मैं उनका विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ। मैं श्री पाण्डेय जी को केवल शिष्टाचार के नाते ही धन्यवाद दे रहा हूँ क्योंकि उन्होंने मुझसे ऐसी सूची तैयार करा कर अपने कर्तव्य का पालन ही किया है।

यह सूची पूर्ण नहीं कही जा सकती है, फिर भी भोजपुरी के आधुनिक साहित्य के अधिकांश ग्रंथ इसमें सम्मिलित हैं, ऐसा मेरा ख्याल है। भोजपुरी के संत साहित्य, बाइबिल साहित्य, प्रकीर्ण लोक काव्य, लोक नाट्य, लोक एवं भोजपुरी सम्बन्धी हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के समीक्षात्मक एवं संदर्भ-ग्रन्थों में भी ऐसी ही सूची की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। मैं कह नहीं सकता मैं इसे पूरा कर सकूँगा या नहीं। यह तो बहुत कुछ साहित्य-प्रेमियों के सक्रिय सहयोग पर निर्भर करता है।

विगत तीस वर्षों की अवधि में बिहार और उत्तरप्रदेश में अनेक प्रतिभाशाली लेखकों एवं कवियों का उदय हुआ है। इन कवियों ने इठलाती हुई ग्राम्य युवतियों के अल्हड़पन का, तारों से चमत्कृत उन्मुक्त आकाश का, हल जोतते किसानों का, पुरवा हवा से लहराते पौधों का और वर्षा ऋतु के उमड़ते बादल आदि ग्रामीण दृश्यों का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है। भोजपुरी के अनेक कवियों ने एक ही संग्रह में हिन्दी तथा भोजपुरी के पद प्रकाशित कराये हैं जो उनके अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अटूट प्रेम का परिचायक है। कुँवर सिंह पर भी अनेक कवियों ने ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें चन्द्रशेखर मिश्र का कुँवर सिंह महाकाव्य और हरेन्द्र देव जी का कुँवर सिंह महाकाव्य सुन्दर कृतियाँ हैं। वर्तमान कवियों और लेखकों में सर्वश्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, गोरक्षहरि, गणेश दत्त 'किरण' रामविचार पाण्डेय, प्रणयी, अनिरुद्ध, भोलानाथ गहमरी, महेन्द्र शास्त्री पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, प्रभुनाथ मिश्र, हरिराम द्विवेदी, स्वामी विमलानन्द सरस्वती, परमेश्वर 'शाहाबादी', अशान्त, माहेश्वर तिवारी, 'शलभ', 'कन्हैया सिंह, देवकुमार मिश्र, 'अलमस्त', जगदीश ओझा, 'सुन्दर', 'राकेश', 'भानु', गिरिजेश, राहगीर, जगन्नाथ, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा, पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कपिल, शैदा, सत्यनारायणलाल, अविनाशचन्द्र विद्यार्थी, 'धवल', सीतारामचन्द्र चरण, 'राम', विवेकी राय, रामवृक्षराय 'विधुर', 'राही', नाथनारायण सिंह, लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, उमाकान्त वर्मा, निर्मल, संकेत, मदनमोहन सिन्हा 'मनुज' आशा सहाय, श्रीमती राधिका देवी, भ्रमर, विद्याधर शुक्ल, मोती बी० ए०, रमेशचन्द्र झा, विजेन्द्र 'अनिल', तैयब हुसेन 'पीड़ित', रामजी सिंह 'मुखिया', राघवशरण मिश्र 'सुहृदुब्बर' व्रजकिशोर मिश्र, रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त', लक्ष्मण त्रिपाठी 'प्रदीप', पाण्डेय आशुतोष, सिपाही सिंह 'श्रीमन्त', विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, सतीश्वर सहाय 'सतीश', बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव 'मधुकर', अम्बिकादत्त त्रिपाठी 'व्यास', वेदनन्दन, लवशर्मा 'प्रशान्त' रामसेवक 'विकल', राजेश परमार, गगा प्रसाद साहु, पंकज, माधव पाण्डेय 'निर्मल', शारदा चरण, स्वर्णकिरण, कान्हजी सिंह 'तोमर', कन्हैया प्रसाद 'सदय', निर्भीक, रामनगीना सिंह 'विकल', चितरंजन प्रसाद सिन्हा 'सुमन', विद्याधर शुक्ल विद्यार्थी, नन्दकिशोर झा, रामवचन सिंह यादव 'अँजोर', पद्मदेव, महाकवि केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' कलक्टर सिंह 'केसरी', प्रसिद्ध नारायण सिंह, ऋषीश्वर, रघुवंश नारायण सिंह डा० विश्वनाथ सिंह, कुमारी मृदुलता श्रीवास्तव, वाइज्ञन 'विजय' दिनेश नारायण सिंह, श्री महेन्द्र, शीतल, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, बालेन्दुशेखर तिवारी, महेन्द्रनाथ पाण्डेय, महेन्द्रनाथ राय, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' सुश्री प्रमिला पाण्डेय, राय सच्चिदानन्द, श्री सत्यव्रती, उमादत्त शर्मा, सत्यनारायण 'केसरी', हरिहर प्रसाद 'बेकार भोजपुरी', श्री पुण्यदेव नारायण सिंह, रामजीत सिंह, विश्वरंजन, डा० वसन्त कुमार, सांवलिया 'विकल', भारतेश्वर नारायण सिंह, राम जीवन सिंह 'जीवन', डा० जितराम पाठक, रंगजी पाण्डेय, उर्मिला जैन, सन्तोष कुमार, डा० सलिल, 'राहगीर' कालु राम 'अखिलेश', प्रकाशवती, सीता सुन्दर देवी प्रियंवदा, श्री राम सिंह 'उदय', महेश्वर प्रसाद, बद्री नारायण पाठक, विश्वनाथ दूबे, शिवशंकर दूबे, रमाकान्त 'मुकुल', शिवबली शर्मा सिकन्दरपुरी, कपिलदेव पाण्डेय, रमता, पाण्डेय चन्द्रविनोद, हरिश्चन्द्र, डा० श्रीधर मिश्र, सूर्य परमार, गोपाल शरण ओझा, राजकिशोर, 'अनुरागी', गणेश तिवारी, सिद्धिनाथ तिवारी, 'विमलेश', प्रफुल्लचन्द्र द्विवेदी, 'दिनेश' इत्यादि ने अच्छा यश अर्जित किया है। भोजपुरी का साहित्य बड़ी तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रकाशित साहित्य-सूची

काव्य और कविता संग्रह

गो-विलाप छन्दावली—(भोजपुरी-हिन्दी-ब्रजभाषा)—श्री दूधनाथ उपाध्याय प्र० श्री नवरंग सिंह रईस, भेलसा मुद्रक भारत जीवन प्रेस १८९३ ई० (ऋतु सं) पृष्ठ संख्या—३४, मूल्य दो आने।

चारोखंड-प्र०—जगदीश नारायण तिवारी, १०, ए० मछुआ बाजार स्ट्रीट कलकत्ता—७, १९४३ ई० पृ० १९२, मू० २)।

बदमाश-दर्पण-तेगअली प्र० भारत जीवन प्रेस, काशी, १८९५ ई० पृ० २२ मू० १ आना ६ पाई।

बिरहा-रामकृष्ण वर्मा, भारतजीवन प्रेस, काशी, १९०० ई० पृ० २६ मू० एक आना।

भारत के गीत-दूधनाथ उपाध्याय, प्र० सं० १९१४ द्वि० सं० प्रकाशक डी० आ० ए० आ० बलिया १९१८, ५००० प्रति पृ० २६, मू० ९ पाई।

रघुवीर पत्र पुष्प-(हिन्दी—भोज०) रघुवीर नारायण शरण) १९१७

रघुबीर रस रंग--(हिन्दी-भोजपुरी-ब्रजभाषा) रघुवीर नारायण (शरण) बिहार बुक स्टोर पटना, १९१७ पृ० ८८, मू० १० आना।

हिलोर--(हिन्दी-भोज०) महेन्द्र शास्त्री, राहुल पुस्तकालय पो० रतनपुरा, महाराजगंज, सारन, १९२८ पृ० ६४ मू० चार आना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ग्राम-गीतांजलि--चंचरीक, प्र० सं० ठाकुर महातम राव (क) रेती चौक, गोरखपुर, १६३१ (ख) द्वि० संस्करण, हितैषी प्रिन्टिंग वर्क्स, बनारस, १६३५ मू० १)। इस ग्रन्थ के चार संस्करण हो चुके।

भूकम्प पचीसी-दुधनाथ उपाध्याय, प्रभात प्रेस, चौक, बलिया। १६३४ ई० द्वि० संस्करण पृ० १० मू० ६ पाई।

गुनगुन (हिन्दी-भोजपुरी) मनोरंजन प्रसाद सिंह, पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय, १६३७ पृ० १४० मूल्य १२ आना।

कवट अनुराग-(हिन्दी-भोजपुरी) सिद्धनाथ सहाय विनयी, अम्बिका भवन, मनसा पांडे का बाग, आरा (श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, भोजपुरी के कवि और काव्य पृ० २४०, प्रकाशन १६४१ के लगभग पृ० सं० ६० मू० ६ आने।

मड़ई पलानी (सम्भवतः हिन्दी-भोज०) रघुवीर नारायण (शरण) इस पुस्तक की चर्चा श्री सिद्धेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव ने भोजपुरी लोक साहित्य पृ० सं० २७ पर की है। अन्य विवरण नहीं मिल सका।

द्रौपदी का रक्षा (हिन्दी-भोज) सिद्धनाथ सहाय विनयी, प्रकाशक तथा अन्य सूचनायें उपलब्ध नहीं हो सकीं।

धरती के गीत (लोकभाषा कविता-संग्रह) संपादक-रमेशचन्द्र सिन्हा, जन प्रकाशन गृह, राज भवन स्टैण्डर्ड रोड, बम्बई ४ पृ० सं० ७४ मूल्य १२ आने।

देहाती दुलकी स्व० श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती', देहाती दुनिया, बेतिया (चम्पारण) सन् १६४७ ई० पृ० सं० ४० मू० ४ आने।

आज की आवाज (हि० भो०) महेन्द्र शास्त्री, राहुल पुस्तकालय पो० रतनपुरा वाया महाराजगंज (सारन) १६४७ ई० पृ० सं० ७६ मू० ८ आना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सरजुक बाढ़—चन्द्रदेव सिंह 'हृदय', प्रकाशन १९४८ ई० ।

तिरंगा—महेश्वर प्रसाद, प्रकाशक रचयिता, ग्राम पो० भरौली, शाहाबाद, सन् १९५० ।

अमरलत्ती—अर्जुन कुमार सिंह 'अशान्त', अशोक प्रेस, पटना, १९५० ई० पृ० सं० १८०, मू० १२ आना ।

गाँव के ओर—रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', सुलभ साहित्य सदन, अरविन्द कुटी, कंकड़बाग कालोनी, पटना-१ प्रथम संस्करण १९५१ ई० पृ० ७० मूल्य ८ आना द्वि० संस्करण परिवर्द्धित' सन् १९६३ ई० पृ० ११२ मू० २ रुपया, भोजपुरी परिवार पटना-३ ।

काइलिया—डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी', जनवाणी प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स लि०, गोदौलिया, काशी । १९५२ ई० पृ० सं० ११५ मू० २ रु० ।

चाँदनी—(हि० भो०) सरयू सिंह 'सुन्दर' सुन्दर सदन, रामनगर, चम्पारण, सन् १९५३ ई० पृ० सं० ४५ मू० १-४-० रु० ।

सितार—डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी', देववाणी मन्दिर, आरा, सन् १९५३ ई० पृ० सं० ११७ मू० २ रु० ।

बिनिया बिछिया—राम विचार पाण्डेय, भोजपुरी पुस्तक भवन, बलिया १९५४ ई० पृ० सं० ४४ मू० १२ आना द्वि० संस्करण ।

चोला—वीर काव्य, महेन्द्र शास्त्री, राहुल पुस्तकालय, रतनपुरा सारन, सन् १९५४ ई० पृ० सं० ४१ मू० ४ आना ।

मधुवन—डा० कमला प्रसाद मिश्र, 'विप्र' । भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर, सन् १९५४ पृ० सं० ९० मू० ६ आना ।

उदयन—(हि० भो०) रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' । चाणक्य प्रकाशन, पटना १९५५ ई० पृ० सं० ८० मू० १ रु० ।

भोजपुरी वीर काव्य—प्रसिद्ध नारायण सिंह, अन्तराष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, नया टोला, पटना । सन् १९५५ ई० पृ० सं० १४० मू० २ रु० ।

चम्पारण गुनगान—ब्रजविहारी प्रसाद 'चूर' प्रका० रचयिता । रामनगर, चम्पारण । सन् १९५५ पृ० सं० १६ मू० ३ आना ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पुरइन के फूल—डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'। देववाणी मंदिर, आरा सन् १९५५ ई० पृ० सं० ५५, मू० १-८० रु०। भोजपुरी परिवार, पटना ३

चकोह—दिवाकर लाल 'अंकुर'। प्र० महेश मिश्र, मिश्रा प्रकाशन मंदिर सुमन पट्टी, बलिया, सन् १९५६ ई० पृ० सं० ३२ मू० ६ आना।

वीर बाबू कुँवर सिंह— (प्रबन्ध काव्य) डा० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर सन् १९४७। पृ० सं० ४८ मू० १ रु०।

चम्पारण के गीत—बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, भारतेन्दु प्रकाशन, मोतीहारी। सन् १९५७ ई० पृ० सं० २२ मू० आठ आना।

कुँवर सिंह (महाकाव्य)—हरेन्द्रदेव नारायण। सन् १९५७ ई० प्र० आरती प्रकाशन, चित्तकोहड़ा, पटना, पृ० सं० १६१, मू० ५ रु०।

गाँव गिरान—शिवदत्त श्रीवास्तव 'सुमित्र'। राहगीर के भोजपुरी गीत और गीतकार में चर्चा।

भोजपुर के रतन—वालेश्वर राम, भोजपुरी साहित्य परिषद-१, गोलमुरी जमशेदपुर ३, सन् १९४७ ई० पृ० सं० ३२ मू० ४ आना।

जीवन- १ —डा० रामबिचार पाण्डेय, भोजपुरी साहित्य भवन, बलिया, सन् १९५७ ई० पृ० सं० ४८ मू० १२ आना।

आसा —डा० राम विचार पाण्डेय, साहित्य भवन, बलिया। सन् १९५६ पृ० सं० ६२ मू० १२ आना।

बिकाम भुन्नी लाल, प्रका० रचयिता-ग्राम पो० नचाप (शाहाबाद) सन् १९५८ ई०, पृ० सं० १३, मू० ३७ नया पैसा।

गाँव-गिराउँ—(हि०-भो०-अवधी) राजबली दूबे 'तरल', प्र० आनन्द बहादुर सिंह तुलसी पुस्तकालय, भदैनी, वाराणसी, सन् १९५६ ई० पृ० सं० ७६ मू० १ रु० ४ आना।

हरिअर-हरिअर खेत—प्रभुनाथ मिश्र, महान प्रकाशन बलिया, सन् १९५९ ई० पृ० सं० १०३ मू० ३ रु० आठ आना।

महुआ बारा—मोती बी० ए०, शर्मा ब्रदर्स लूकरगंज, इलाहाबाद, सन् १९५१ पृ० सं० ८४ मू० ३ रु० आठ आना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गुनावन—स्व० दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ'। नव साहित्य प्रकाशन मंदिर दलीपपुर-शाहाबाद सन् १९६० ई० पृ० सं० ११४ मू० ३ रु० (हिन्दी अंग्रेजी टीका सहित)

एटम के युग में—स्व० दुर्गाशंकर प्र० सिंह 'नाथ' अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन, बक्सर, सन् १९६० ई० पृ० सं० २७ मू० १२ आना।

राहो—माधव पाण्डेय 'निर्मल'। सन्मुखा प्रकाशन, आरा (शाहाबाद) सन् १९६० ई० पृ० सं० ३८ मू० १२ आना।

संगम— (हि०-भोज०) जगदीश ओझा 'सुन्दर', विद्या मन्दिर, बलिया। सन् १९६१ ई० पृ० सं० १३६ मू० २ रु० ।७३ पन्ना से १३६ पन्ना तक ३७ कविता ।

ललकी किरिनियाँ के कोर—(भोज०-हिन्दी) गजानन प्रसाद, जनसम्पर्क विभाग, विहार, पटना, पृ० सं० ३६ मू० चार आना, भोजपुरी परिवार, पटना—३।

धरती के गुहार—सं० प्रो० उमाकान्त वर्मा, भारतीय जननाट्य संघ हाजीपुर (मुजफ्फरपुर) सन् १९६० ई० (१) पृ० सं० १२ मू० २ आ०।

ललकार—(हिन्दी-उर्दू-भोज०) सं० रघुवंश नारायण सिंह, भोजपुरी कार्यालय, आरा। सन् १९६२ ई० पृ० सं० ४८ मू० चार आना।

भुरुकि बहे ना—रामवृक्ष राय 'विधुर'। अन्तंर्प्रांतीय, सुहृद साहित्य गोष्ठी, गाजीपुर, बलिया। सन् १९६२ ई० पृ० सं० ५०, मू० १ रु०।

समय की पुकार—(हि०-भोज०) त्रिलोकीनाथ उपाध्याय। प्रकाशक रचयिता, भड़सार सहजनवा. गोरखपुर। सन् १९६२ ई० पृ० सं० १८ मू० चार आना।

वतन का तराना—(हि०-भोजपुरी) बलदव प्रसाद श्रीवास्तव। प्रकाशक रचयिता, मोतीहारी, सन् १९६२ ई० पृ० स—मू० १ आना ६ पाई।

रुक जा बदरा—मधुकर सिंह, यशदा प्रकाशन, आरा, सन् १९६३ ई० पृ० सं० ५६ मू० एक रु०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हिमालय ना झुको कबहूँ— मुक्तेश्वर नाथ तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा) हिन्दी परिषद, आशापुर, चित बड़गांव, बलिया, सन् १९६३ ई० पृ० सं० १९६४ मू० एक रु०।

धोखा—(भोज०-हि०) महेन्द्रनाथ शास्त्री। राहुल पुस्तकालय, रतनपुरा सन् १९६३ ई० पृ० सं० ३२ मू० ४ आना।

गोड़ लागी मैया नारायणी—हि०-भोज०) प्रकाशक जन सम्पर्क विभाग बिहार, पटना सन् १९६३ ई० मू० चार आना।

बेलपत्तर—गणपति पाण्डेय 'संकेत'।

ओकास (भोज०) रामकुमार त्रिपाठी। प्र० ग्रन्थकार, ठठेरी बाजार डुमराँव (शाहाबाद) प्र० सं० स० २०१३ वि० पृ० सं० ७४ मू० ६४ पैसा।

सुधाबून्द—(हि०-ब्रज-भो०) लाला खड्ग बहादुर मल्ल। खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर सन् १८८८ या १८८४ ग्रियर्सन) (६० कजरी)।

महेन्द्र मंगल, प्रथम भाग—(हिन्दी-भोजपुरी) महेन्द्र मिश्र, प्र० त्रिगुनानन्द मिश्र, जमींदार छपरा। प्रकाशन काल १९२० का पहिले। मू० २ आना ६ पा०।

जिअरा बोले—महेन्द्र कुमार सिंह 'नीलम' गाजीपुर, इलाहाबाद बुक हाउस, चीरो रोड, इलाहाबाद,प्र० का० १९६२ ई० पृ० सं० ६६ मू० २.५० पैसे।

सुदामा यात्रा—(खंड काव्य) श्याम जी—श्याम पुस्तकालय, पिंडो। देवरिया प्र० का० १९६२ ई० पृ० सं० ४२ मू० ६२ पैसा।

बिगुल—महेन्द्र भूषण त्रिपाठी, मधुर, हिन्दी परिषद आशापुर चितबड़गांव, बलिया प्र० काल० १९६३ पृ० सं० ५२ मू० ७५ पैसे।

पिंजड़ा—(भोज०) गणेश दत्त 'किरण'। शेरशाह स्टोर्स, इटाढ़ी; शाहाबाद प्र० का० १९६३। पृ० सं० ५२ मू० १ रु०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तरंगिणी—(भोज०-हि०) श्यामसुन्दर ओझा 'मंजुल'। आदर्श पुस्तक भंडार ५८ अपर चितपुर रोड, कलकत्ता। प्रका० का० १९६३ ई०। पृ० सं० १०२ मू० २-५० पैसे।

हिमगिरि के नेवता—(भोज० हि०) श्याम जी। शर्मा पुस्तकालय भिंडो देवरिया। द्वि० संस्करण। सन् १९६४ ई० पृ० स० ३० मू० ५० पैसा।

(चीन विरोधी कवितन के संग्रह)

भोजपुरी कविता कुंज—प्र० ज्ञान० मं० लि० वाराणसी १९६४। पृ० सं० ८० मू० १-२५ पैसा। भोजपुरी संसद, वाराणसी के पहिलका अधिवेशन में पढ़ाइल कवितन के संग्रह

साहित्य रामायण—किष्किन्धा, सुन्दर काण्ड—(भोजपुरी) स्व० दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', नव साहित्य मंदिर, रैन बसेरा, दलीपपुर-शाहाबाद सन् १९६४ पृ० २६० मू० ६ रु०।

साहित्य रामायण—अयोध्या कांड, आरण्यकांड—(भोज०) स्व० दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' नव साहित्य मंदिर, रैन बसेरा, दलीपपुर शाहाबाद, सन् १९६६ पृ० सं० २८८ मू० ६ रु०।

साहित्य रामायण—लंका कांड- (भोज०) स्व० दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' नाथ साहित्य मंदिर, रैन बसेरा, दलीपपुर शाहाबाद सन् १९६५ ई० पृ०सं० २०७ मू० सात रु०।

बनारसी बानी- (भोज०) गहरेबाज बनारसी, शनिवार गोष्ठी प्रकाशन। १५ शकरकंद गली, वाराणसी, १९६४ ई० पृ० सं० ६६ मू० २५ पैसे।

बयार पुरवैया—(भोज०) भोलानाथ 'गहमरी' भारती प्रकाशन ६२/१३६ स्वामी विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद। सन् १९६४ ई० पृ० सं० १२८ मू० ३६० पैसे।

तेग अली और काशिका— सं० रुद्र काशिकेय। ज्ञान मंडल लि०, वाराणसी। सन् १९६४ ई० पृ० सं० १३८ मू० ३ रु०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

विसराम के बिरहे—सं० ईश्वर चन्द्र सिन्हा, भोजपुरी संसद, वाराणसी। सन् १९६५ ई० मू० १-५० पैसे।

गीत मंजरी—(हिन्दी-भोजपुरी) रचयिता एवं प्रकाशक-विश्वनाथ प्रसाद "शैदा" डुमराँव, शाहाबाद। प्र० का० १९५० ई०। पृ० सं० २०। मू० ४ आने। (ग्रंथकार से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित)

चितचोर—रच० प्रका० विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', डुमरांव, शाहाबाद। प्र० का० १९५३।

बदरऊ—रच० प्रका० कैलाशनाथ ओझा, हाई स्कूल, बरेजा, सरन। प्र०का० सन् १९६४ ई० पृ० सं० १६। मू० ४ आने।

जागरण—(भोज०, ब्रज०, हिन्दी उर्दू) रच० प्रका० विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', डुमराँव, शाहाबाद। प्र०का० १९५६ ई०। पृ० सं० ४२ मू० १२ आने।

आपन देश: आपन गीत—विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', डुमरांव, शाहाबाद् प्र० श्रीमती लक्ष्मी देवी, रामप्रसाद मिश्र की गली, डुमरौंव, शाहाबाद। प्र० का० १९६४ ई० मू० ८ आने।

ग्राम गाथा—दूधनाथ शर्मा 'श्याम', प्रका० इन्द्र प्रसाद आजाद, ग्राम बगरा, पो० भाटपार जिला देवरिया प्र० का० १९५८ ई०। पृ० सं० ६४। मूल्य ८ आने!

राहगीर के गीत—(हि०-भोज०) स्व० श्री राहगीर, प्र० राहगीर प्रकाशन, दशाश्व मेध, वाराणसी प्र० का० १९६५ ई०। मू० ३ रु० ८ आने।

पङ्कजनियाँ—जयनन्दन ओझा 'जिया', । प्र० सतीश प्रकाशन, गौरा, शाहाबाद। प्र०का० १९६५ ई०। पृ० सं० १५२ मू० २ रु० ८ माने।

हल्फी—मृगेन्द्र प्रताप सिंह 'श्रमिक' प्रका० जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद १ गोलमुरी बाजार, जमशेदपुर ३। प्रकाशन काल १९६५ ई० पृ० सं० ६४ मू० १ रु०।

कुंवर सिह—चन्द्रशेखर मिश्र, स्वाति प्रकाशन, बुलानाला, वाराणसी मू० १० रु० प्र० का० १९६५ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जनगान—(बिहार की लोकभाषाओं के गीतों का संग्रह) प्र० जन-सम्पर्क विभाग। प्र० काल १९६० ई०। पृ० सं० ३२। मू० २५ पैसे।

किरण-बावनी—गणेशदत्त 'किरण' प्र० भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर, प्र०का० १९६६ ई०। पृ० सं० ४०। मू० १ रु०। (वीर रस के कवितन के संग्रह)।

आदर्श भोजपुरी कविता कुंज—गोवर्धन सिंह, 'गोरक्षहरि' प्र० जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, गोलमुरी बाजार १। प्र० का० १९६८ ई० पृ० स० ७६ मू० १ रु०।

बीत गइल बरसात— ब्रजकिशोर प्रसाद 'पंकज', प्र० कविता कुंज, देवरिया, महाराजगंज, सारन, प्र०का० १९६७ ई० पृ० सं० ६४ मूल्य २ रुपया।

उमंग—परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी'। प्रकाशक पीरो, भोजपुरी साहित्य परिषद (शाहाबाद)। पृ० सं० ४९, मू० १ रु०।

माटी के महँक—रचयिता-प्रकाशक चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, पृ० सं० ४८ प्र० का० १९६७ ई० मू० १ रु०।

शिव शिव ललित वल्ली— (व्रज-अवधी भोजपुरी) विन्ध्याचल प्रसाद 'ललित', प्र० चम्पारण डिस्ट्रीक्ट बोर्ड प्रेस, मोतिहारी। प्र० का० १९२७ पृ० सं० १३४ मू० ८ आना।

कुणाल—(खंड काव्य) रामवचन लाल श्रीवास्तव। प्र० भारती भवन बागड़ी शाहाबाद। प्रकाशन का० १९५७ पृ० सं० ४५ मू० १ रु०।

नवरत्न—(हिन्दी-भोजपुरी) सम्पादक अम्बिका दत्त त्रिपाठी 'व्यास'। कल्पना प्रकाशन डुमरांव, प्र० काल १९६८ पृ० सं० ६०। मू० १-५० रु०।

कजरौटा—राधा मोहन चौबे 'अंजन', ग्राम अमहीं बांके' पो० कटेया (सारन)। प्रकाशन काल १९६६ ई० पृ० सं० ३४ मू० १ रु०

फुहार— राधा मोहन चौबे 'अंजन' ग्राम अमहीं बांके पो० कटेया (सारन) प्र० का० १९५० पृ० सं० १६ मू० ५० पैसा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी लोकगीत—ले० विन्ध्यवासिनी देवी, रोड नं० १ क्वार्टर नं० ६ काजीपुर रोड (मछुआटोली) पटना ४, पृ० सं० २८ मू० ५० पैसे।

आज की आवाज—भोजपुरी-हिन्दी, महेन्द्र शास्त्री, प्रकाशक, सूर्यदेव सिंह, योगी कार्यालय प्र०का० १९४०, पृ० सं० ५०, मू० आठ आना।

प्रदीप—(हि० भोजपुरी) महेन्द्र शास्त्री प्र० राहुल पुस्तकालय, रतनपुर।

भकोलवा—(भोज०) महेन्द्र शास्त्री प्र० का० १९२०-२२, प्र० राहुल पुस्तकालय पृ० सं० ५ मू० ४ आना।

उत्तर प्रदेश के लोकगीत—प्र० सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ प्र०का० १९५९ ई० पृ० २५० मू० ५ रु० २० पैसे।

ललकार—सं० रघुवंश नारायण सिंह, प्र० भोजपुरी कार्यालय, आरा, प्र० का० १९६२ पृ० सं० २४ मू० २५ पैसा।

बबूल के फूल—रमाकान्त सिंह 'रमेश', समाज शिक्षा बोर्ड, विहार, पटना प्र० का० १९६२ पृ० सं० ३६ मू० ५० पै०।

पाँख सतरंगी—जगन्नाथ, पुष्कर प्रकाशन, बक्सर, प्र० का० १९६७ ई० पृ० ५६, मू० दो रु०।

बलिदान की बारी—(भोज०-हिन्दी) प्र० कृष्ण मुरारी शुक्ल, गोरखपुरी कनइल, गोरखपुर प्र० का० १९६५ ई०, पृ० सं० ३२ मू० ७५ पैसे।

भिनसहरा—कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र', भोजपुरी परिषद, भाटपाररानी, देवरिया।

सेमर के फूल—मोती बी. ए.। भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी प्र० काल १९६७ ई० पृ० सं० ८०, मू० ४.५० पैसा।

जीरादेई से सदाकत आश्रम तक—देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद पर कविता और गद्य संग्रह प्र० भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी, मूल्य १.७५ पैसे।

मोती के मुक्तक—मोती बी. ए.। प्र० का० २०२७ वि०, प्रकाशक—भोजपुरी संसद, वाराणसी पृ० सं० ८४, मू० ३-५० पैसे।

बाजे मोरा पायल— गजानन प्रसाद, श्री रघुनाथ प्रसाद, रिमझिम प्रकाशन, बद्रीनाथ लेन, मीठापुर, पटना-१, पृ० सं० ८० मू० २-२५ पैसा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी कवितन के हिन्दी संग्रह

भोजपुरी के कवि और काव्य — ग्रन्थकार स्व० महाराज कुमार दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', विद्यावाचस्पति। सम्पादक डा० विश्वनाथ प्रसाद, प्रकाशक हिन्दी राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, सन् १९५८ ई० पृ० सं० ३१९ मू०

आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार—सं० राहगीर, मधु प्रकाशन चेतगंज, वाराणसी सन् १९५८ ई० पृ० सं० १२५ मू० ३ रु० ८ आना।

भोजपुरी के नये गीत और गीतकार—सं० राहगीर, उदयन प्र० वाराणसी सन् १९६३ पृ० सं० १५९ मू० ६ रु० ५० पैसा।

नाटक साहित्य

देवाक्षर चरित—(हिन्दी-भोज०) रविदत्त शुक्ल, आर्यदेशोपकारी सभा, बलिया, प्र० का० १९८४ ई० काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में यह किताब सुरक्षित ।

नागरी विलाप—(हिन्दी-भोजपुरी) रामगरीब चौबे, प्रका० ग्रन्थकार राजकीय पाठशाला, काशी, सन् १८८५ ई० पृ० सं० ३२ मू० २ आना ६ पाई। काशी नागरी प्रचारिणी सभा में सुरक्षित।

जंगल में मंगल —(सम्भवतः हि० भोज०) स्व० रविदत्त शुक्ल, सन् १८९६ ई० बनारस से प्रकाशित। डा० ग्रियर्सन कि लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इन्डिया भाग ५, जिल्द २, में वर्णित। काशी नागरी प्रचारिणी सभा में सुरक्षित ।

नयकी दुनिया—(भोज०) महापंडित राहुल सांकृत्यायन, किताव महल इलाहाबाद। पृ० सं० ४०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

डुमसुन नेता—(भोज०) म० पं० राहुल सांस्कृत्यायन,, पृ० सं० ४४ किताब महल, इलाहाबाद ।

मेहरारुन के दुर्दशा—(भोज) म० पं० राहुल सांस्कृत्यायन, पृ० सं० ४०, किताब महल, इलाहाबाद ।

जोंक – (भोज०) राहुल सांस्कृत्यायन, प्र० काल० १६४२ । किताब महल, इलाहाबाद ।

ई हमार लड़ाई ह—(भोज०) म० पं० राहुल सांस्कृत्यायन । किताब महल, इलाहाबाद ।

देश रक्षक—(भोज०) राहुल सांस्कृत्यायन । पृ० सं० ३४ । किताब महल, इलाहाबाद ।

उलटा जमाना—(भोज०) गोरखनाथ चौबे, सतयुग आश्रम, बहादुरगंज, इलाहाबाद, प्र० का० १६४२-४३ ई० (डा० तिवारी भो० भा० सा० पृ० ६५)

लोहा सिंह—(भोज०-हि०) प्रो० रामेश्वर सिंह 'काश्यप' ग्रन्थमाला कार्यालय, बांकीपुर पटना प्र० काल १६५५ मू० २-४ आने ।

लोहा सिंह—मुखड़े और अन्यकरतूत (द्वि० संस्करण संभवतः) राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, मछुआ टोली, पटना, प्र०काल १६६३ (१) पृ० सं० १५२ मू० ३ रु० ।

वीर मंगल पाँड़े—(भोज०) डा० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', भोजपुरी साहित्य मंडल बक्सर, प्रकाशन काल १६५६ ई० पृ० सं० २६ मू० ८ आना ।

मोती के चन्द्र—(भोज०) ले० प्र० डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', प्र० का० १६५७ ई० पृ० सं० ४३ मू० १२ आ० ।

तीन नाटक—(भोज०) राहुल सांस्कृत्यान, किताब महल इलाहाबाद)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्र० का० १६५८ ई० मू० १-१२ आ०। इस में नइकी दुनियाँ, जोंक आ मेहरारून के दुर्दशा सम्मिलित है।

वृक्ष रक्षा सम्मेलन—(हि० भोज०) बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, भारतेन्दु प्रकाशन, मोतीहारी। प्र० का० १६६४ ई० पृ० सं० १४ मू० १-८-०।

शहीद मंगल पाड़े—(भोज०) डा० राम विचार पाण्डेय, भोजपुरी साहित्य सदन, बलिया। प्र० का० १६६० ई० पृ० सं० ३६ मू० १-१२-०।

रासलीला—(भोज०) मोती बी० ए०। मेसर्स शर्मा ब्रदर्स प्रकाशन १६६० ई० पृ० सं० २८ मू० १ रु० (सचित्र)।

जपनिया राच्छस—(भोज०) राहुल सांस्कृत्यायन। पृ० सं० २८ प्र० काल १६४६। पृ० सं० ४।

बाबू कुँअर सिंह—(भोज०) दुर्गा शंकर सिंह 'नाथ', विद्या भवन, पटना। सन् १६६२ ई० पृ० सं० १२८ मू० ३-१२-०।

नया जमाना—(भोज०) शिवचन्द्र ओझा प्र० साहित्य सहकार, लहेरिया सराय, दरभंगा। प्र० का० सं० १६६३ ई० पृ०सं० १५ मू० ८ आना।

स्वप्न वासवदत्तम्—(भोज० अनुवाद) देवकुमार मिश्र 'अलमस्त', रामानन्द पुस्तकालय, हेतमपुर, शाहाबाद। प्र० का० १६६३ ई० पृ० सं० ५८ मू० १ रु०।

योजनानाटिका—(भोज०) शिवचन्द्र ओझा बी० ए०, बी० एल०, प्र० साहित्य सहकार, लहेरिया सराय, दरभंगा, पृ० सं० १५ मू० ५० पैसा।

वरदान—(हि० भोज०) डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी', देववाणी मंदिर धनछुहाँ, शाहाबाद प्र० का० १६६३ ई० पृ० सं० ३८ मू० १ रु०।

गीत रूपक—(हि० भोज०) चन्द्रशेखर मिश्र, कल्याण दास एण्ड ब्रदर्स, ज्ञानवापी वाराणसी, प्र० का० १६६२ ई० मू० १-७५ पैसे।

*तोहरे पर हमरो गुमान बा—(भोज० नाट्य रूपक) रच० प्र० गणेश तिवारी 'प्रशान्त', सी० अदालतगंज क्वाटर, पटना-१ प्र० का० १६६५ ई० पृ० सं० १६ मू० १ रु०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दारू पीयल। वलमुआ—(भोज० हि०, गीत रूपक) चन्द्रशेखर मिश्र, प्र० सेवापुरी, वाराणसी। प्र० का० १९६३।

न्याय के न्याय—(भोज०) दुर्गा शंकर प्र० सिंह 'नाथ', । नवसाहित्य मंदिर, रैन बसेरा, दलीपपुर, शाहाबाद। प्र० का० १९६५ ई० पृ० सं० १६८ मू० ३ रु० ५० पैं०।

बाबू कुँअर सिंह—(भोज० एकांकी) मधुकर सिंह, प्र० भोजपुरी परिवार पटना अँजोर १९७० अंक पृ० सं० ७।

सती दहन—(भोज० संगीत रूपक) व्रज किशोर प्रसाद 'पंकज', प्र० मानसी ६-६-१ गर्दनीबाग, पटना २ पृ० ८ मू० ५० पैसा (संवर्द्धित संस्करण प्रेस में)।

कुँअर सिंह के टेक—(भोज०) समाज शिक्षा बोर्ड, बिहार, पटना प्र० का० १९६१ ई० मू० ६२ पैं०।

नइकी पीढ़ी—(भोज० सामाजिक नाटक) शिवमूरत सिंह, प्र० भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी, पृ० सं० ५ मू० २ रु० ५० पैसा।

जुग्रक वनलीं—(भोज० एकांकी संग्रह) रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक' (भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर १ गोलमुरी बाजार। प्र० का० १९६८ ई० पृ० सं० १३१ मू० २ रु०।

डिबलर—(एकांकी) कुबेर नाथ मिश्र, 'विचित्र' । भोजपुरी परिषद, भाटपार रानी, देवरिया।

बानर के करेजा—(एकांकी) सीतारामचन्द्र शरण 'राम'। भोजपुरी परिवार पटना, अँजोर, अप्रिल—जुलाइ, १९६९ पृ० ३० पर पृ० सं० ७।

कुपातर लइका—(एकांकी) डा० बसन्त कुमार, अध्यक्ष संस्कृत विभाग बी. एन० कालेज पटना, प्र० भोजपुरी परिवार, अँजोर, अप्रैल, १९६० पृ० २५ (पृ० सं० १०)

बेजाइँ—(एकांकी) अविनाशचन्द्र विद्यार्थी। प्र० भोजपुरी परिवार, पटना अँजोर, अक्तूबर १९६० पृष्ठ २७ पर (पृ० सं० १०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रिनुरंग—(संगीत रूपक) डा० रामनाथ 'प्रणयी'। प्र० भोजपुरी परिवार पटना-३ अँजोर जनवरी १९६१ पृष्ठ ८ पर।

पंच परमेश्वर—(एकांकी) प्रो० ब्रजकिशोर मिश्र, प्र० भोजपुरी परि-परिवार पटना-३ अजोर अप्रिल-जुलाई सन् १९६२ ई० पृष्ठ ७५ पर (पू० सं० ९)

तसलवा तोर की मोर—(संगीत रूपक) सत्यनारायण किशरी 'सौरभ', भोजपुरी परिवार पटना से अँजोर १९६७ ई० में प्रकाशित, पृष्ठ ४९ पर कुछ अंश।

मनवाँ के साध—(भोजपुरी सामाजिक आउर राष्ट्रीय नाटक) विमल कुमार सिंह, 'विमलेश' बी.ए. प्र० विहार वाणिज्य प्रकाशन केन्द्र, सीवान, सारन। प्र० का० १९७० पृ० सं० ६५ मू० १ रु० ५० पै० विहार वाणिज्य प्रकाशन केन्द्र, स्टेशन रोड, सीवान (सारन)

साटन सिंह—(एकांकी प्रहसन) ललिता कान्त शरण, धनबाद १९६६ ई० पृ० २८ सचित्र मू० १ रु०।

गँवारचन्द—(एकांकी) विद्याधर शुक्ल 'विद्यार्थी' (मिरजापुर) प्र० भोजपुरी परिवार पटना-३ अँजोर ५४ पन्ना प्र० का० १९६९ अँजोर।

परिछाँही—(भोजपुरी का स्वगत नाट्य) रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक, प्र० भोजपुरी साहित्य परिषद, गोलमुरी बाजार १, जमशेदपुर, प्र० का० १९६६ पृ० स० १०० मू० १ रु०।

मानव—(संगीत रूपक) विन्ध्यवासिनी देवी 'विशारदा', विन्ध्य कला मन्दिर छाजीपुर, पटना-४ प्र० का० १९५१ पृ० ४० मू० १,५९ पै०।

सोना—(नाटक) भागवत शरण सिंह, प्र० जन सम्पर्क विभाग, पटना, १९६४ पृ० ५० निःशुल्क वितरण।

रेल यात्रा—(एकांकी प्र० जन सम्पर्क विभाग, १९५६ पृ० २२ मू० २ आना—किताब हिन्दी में है जिसका चौथा दृश्य भोजपुरी में है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जागरण—प्र० जनसम्पर्क विभाग बिहार पटना, १६५७, पृ० सं० ४८

निर्मोहिया—लेखक एवं प्र० महात्म्य सिंह, 'चौहान' रूंगटा उच्च-माध्यमिक विद्यालय, चाईबासा, १६६५, पृ० सं० ५४, मू० १ रु०।

सुहाग के बिन्दिया (भो० नृत्य रूपक) अर्जुन कुमार सिंह 'अशान्त' प्र० आर्ट्स एण्ड आर्टिस्ट्स, नवीन कुटी, पटना, १६६५ पृ० १० मू० १ रुपया।

गीत रूपक—(हिन्दी और भोजपुरी) चन्द्रशेखर मिश्र प्र० कल्याण दास ऐण्ड ब्रदर्स, ज्ञानवापी वाराणसी प्र० काल १६६४ मू० १-७५। इस संग्रह में बाबू कुँअर सिंह की भाषा हिन्दी है। "आगे आगे लड़इ मोर कुअनियाँ" और "किसानी मोरी मँह मँह महके" भोजपुरी के एकांकी नाटक हैं।

माटी के दीआ घीव के बाती—(सामाजिक नाटक) सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'। प्र० भोजपुरी साहित्य मन्दिर, ३७/६८ जगतगज वाराणसी मूल्य २ रु०।

परिवर्तित धरती—(कहानी संग्रह) सं० राधामोहन 'राधेश' प्र० भोजपुरी साहित्य मन्दिर, ३७/६८ जगतगज वाराणसी। मू० २ रु०

—o—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी साहित्य के प्रकाशित उपन्यास

बिन्दिया—रामनाथ पाण्डेय, शेखर प्रकाशन रतनपुरा, छपरा । प्र० का० सन् १९५६ ई०। पृ० सं० १२० मू० १-८-० ।

जीयन साह—राम नगीना सिह 'विकल' विकल प्रकाशन, गोपालगंज, सारन। प्र० का० १९६४ ई०। पृ० सं० ८० मू० १-५० रु०

सेमर के फूल—डा० बच्चन पाठक 'सलिल', प्र० जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, ९ गोलमुरी बजार, प्र० का० १९६५ ई०। पृ० सं० ५० मूल्य ८० पैसा ।

एगो सुबह एगो साँझ—ले० विजेन्द्र 'अनिल', प्र० डा० शिवराम पाठक, कि० जी० रोड आरा। प्र० का० १९६७। पृ० ११२ मू० ७५ पै०।

सुरमा सगुन विचारे ना—श्री रमेश चन्द्र झा, मोतीहारी।

रहनिदार बेटी—जगदीश ओझा 'सुन्दर', भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी। प्र० का० २०२३ वि० पृ० सं० १६८, मू० १-५० पैसा।

भोजपुरी साहित्य के प्रकाशित कहानी संग्रह

जेहल क सनदि—अवध बिहारी 'सुमन' (अब स्वामी विमलानन्द सरस्वती) मुद्रक नया बिहार प्रेस, कदमकुआँ पटना। प्र० का० १९४८ ई०।

भोजपुरी कहानी सग्रह—संपा०। चन्द्रभूषण सिन्हा, भोजपुरी साहित्य परिषद, १ गुलमुरी बाजार, जमशेदपुर ३। सन् १९६२ ई०। पृ० सं० ९६ मू० १ रु०

भोजपुरी संकलन—ओंकार नाथ मिश्र, नरोत्तम पाण्डेय, भोजपुरी साहित्य संसद, १ सुखलाल जोहरी लेन, कलकत्ता ७। प्र० का० १९६४ ई० पृ० सं० ५६, मू० १ रु०। लघु कथा और कविताओं का संग्रह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

खैरा पीपर कबहूँ ना डोले—रामवृक्ष राय 'विधुर' भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी। प्र० का० १९६४ ई०। पृ० सं० ११२। मू० १ रु०।

छोटोमुटी गाजी मियाँ—सम्पादक, चन्द्रभूषण सिन्हा, भोजपुरी साहित्य परिषद जमशेदपुर-१ गोलमुरी, प्र० का० १९६४ ई०, पृ० सं० ४६ मू० ५० पैसे।

भैरवी क साज—सम्पादक—रामबली पाण्डेय। प्र० भोजपुरी संसद, वाराणसी। पृ० सं० ११२। मू० ३-५० रु०।

बटोही—राय सच्चिदानन्द। प्रकाशक, साहित्य संघ, दुमका। प्र० का० १९६८। पृ० सं० ४०। मू० १ रु०।

बैरिन बंसुरिया—गिरिजा शंकर राय "गिरिजेश"। प्र० प्राच्य प्रकाशन प्र० का० १९६८ ई०। पृ० सं० १३४। मू० ३ रु०।

चालाक चौखड़ी प्रथम भाग--रच० नन्द किशोर झा। देवबन्धु प्रकाशन. श्रीनगर बेतिया। प्र० का० १९६७ ई० पृ० ६२, मू० ३५ पै०

दूसरा भाग— ,, प्र० का० १९६२ पृ० ३८ मू० ४५ पै०।

बुद्धिबल कहार—चम्पारनी भासा में शिक्षा देनिहार रुचिकर कथा) लेखक उपरवा। प्र० का० १९६८ ई० पृ० सं० १६ मू० ३० पैसा।

धरती के फूल—लेखिका, श्रीमती राधिका देवी, गाँवघर प्रकाशन, महादेवा आरा मू० २-५० पैसा।

सरग के सीढ़ी—(भोजपुरी सामाजिक कहानी संग्रह) डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), प्रकाशक साहित्य मन्दिर, जगतगंज, वाराणसी पृ०. मूल्य। सूचना जवपद, के आधार पर।

प्रेमकथा—(भोजपुरी कहानी संग्रह) सं० राधामोहन 'राधेश' प्र० भोजपुरी साहित्य मन्दिर, २७।९२ जगतगंज, वाराणसी मू० ७५ पैसा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

निबन्ध संग्रह

के कहल चुनरी रंगालऽ—(ललित निबन्ध संग्रह) प्रो० विवेकी राय, भोजपुरी संसद, जगतगंज वाराणसी, प्र० का० १९६८ पृ० सं० ११० मू० ३-२० पै० ।

जीराडेई से सदाकत आश्रम—सं० राधामोहन 'राधेश' । प्र० भोजपुरी साहित्य मन्दिर, नचाप, सारन प्र० का० १९६६, पृ० ११०, मू० १ रु० ७५ पै० ।

लहालोट—सं० डा० वचन पाठक 'सलिल', प्र० जमशेदपुर, भोजपुरी साहित्य परिषद, १ गोलमुरी बाजार जमशेदपुर ३ । प्राप्ति स्थान रोड नं० १५, क्वार्ट न० २।२, टेलको कालोनी जमशेदपुर-४ पृ० सं०-१०६ मू० १-५० पै० ।

गाँधी गाथा—(भोजपुरी पद्य-गद्य) सं० राधा मोहन 'राधेस', स० सं० वीरेन्द्र-नारायण पाण्डेय । प्र० भोजपुरी साहित्य मंदिर, वाराणसी छपरा—मू० १ रु० प्राप्ति स्थान—भोजपुरी साहित्य मन्दिर सी० २७-६७-६८, जगतगंज वाराणसी ।

भोजपुरी पर हिन्दी के निबंध एवं सन्दर्भ ग्रन्थ

भोजपुरी भाषा और साहित्य—डा० उदय नारायण तिवारी प्र० बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना । प्र० १९५४ ई० पृ० सं० ३६० मू० १३ रु० ५० पै० ।

० भोजपुरी लोक गाथा—डा० सत्यव्रत सिन्हा । हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद । प्र० का० १९५७ ई०, पृ० सं० १५१, मू० २-७० पै० ।

हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, १६ वां भाग—महापंडित राहुल साकृत्यायन एवं डा० कृष्णदेव उपाध्याय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्र० का० १९५७ ई०, पृ० सं० ७८० मू० २५ रु०। भोजपुरी लोक साहित्य शीर्षक-कृष्णदेव उपाध्याय पृ० सं० ८२ से १७३।

लोक साहित्य की भूमिका—डा० कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन लि०, प्रयाग, प्र० का० १९५८ ई० पृ० सं० २७५ मू० ८ रु० भोजपुरी लोक साहित्य के अनेक स्थान पर विवेचना।

भोजपुरी लोक साहित्य (एक अध्ययन) श्री बैजनाथ सिंह 'विनोद', ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना, प्र० का० १९५८ ई० पृ० २९५ मू० ५ रु०।

पंचदश लोकभाषा निबन्धावली—(संकलित) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना। प्र० का० १९६० ई० पृ० सं० ३०४, मू० ४-५० पै०। गणेश चौबे का भोजपुरी भाषा और साहित्य परिषद के वार्षिकोत्सव में पृ० २३-४३ तक)।

भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन—डा० कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, सन् १९६० ई०, पृ० सं० ४५२, मू० १० रु० पी. एच. डी. का स्वीकृत निबन्ध।

भोजपुरी लोकगीतों का विविध रूप—डा० श्रीधर मिश्र-प्रकाश प्रिंटिंग वर्क्स, ३ बलरामपुर रोड, इलाहाबाद। प्र० काल १९६१ ई० पृ० सं० १८४ मू० ४ रु०।

भोजपुरी एक समीक्षा—स्व० श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'। नव साहित्य मन्दिर, रैन बसेरा, दलीपपुर, शाहाबाद। प्र० काल १९६४ पृ० सं० ५२ मू० २ रु०।

जन-कवि भिखारी ठाकुर—श्री महेश्वर प्रसाद, प्रकाशक, भोजपुरी परिवार, सलिमपुर अहरा, पटना-३। प्र० का० १९६४ ई० पृ० सं० ११४ मू० ४ रु०।

भोजपुरी व्याकरण—श्री राजबिहारी राय शर्मा एम० ए०। प्र० भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी, प्र० का० १९६४ ई० मू० २ रु०।

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लोक साहित्य के सम्पादित संग्रह

कविता कौमुदी, ५वाँ भाग—(ग्राम गीत) रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मंदिर, प्रयाग, प्र० काल १९२९ ई०, पृ० सं० ५१६ मू० ३ रु०।

कविता कौमुदी, ३ रा भाग—(ग्राम गीत) रामरेश त्रिपाठी, नवनीत प्रकाशन लि०, बम्बई, द्वि० संस्करण, १९५५ पृ० सं० ८८७ मू० ८ रु०। उपर के ग्रामगीत का संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण है।

हमारा ग्राम साहित्य, पहला भाग—रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मंदिर प्रयाग, प्र० का० १९५१ ई०, पृ० सं० ३७६ मू० ४ रु०।

इसका दूसरा भाग भी प्रकाशित है।

ग्राम साहित्य—कविता कौमुदी ५वाँ भाग—संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण।

सोहर—सं० पं० रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मन्दिर, प्रयाग।

लील-खो-रञा-के खेल, भाग दूसरा—प्रकाशक तथा सम्पादक, रामनरेश त्रिपाठी, सन् १९४१ पृ० २१० इसमें डुमराँव के जातीय भाषा के साथ, नागपुरिया भोजपुरी के भी गीत है।

सोने की ओधी—लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, शर्मा ब्रदर्स, १३२ लूकरगंज इलाहाबाद। सन् १९५७ ई० पृ० सं० १५४ मू० २-२५ पैसा। इसमें गाजीपुर और बलिया की लोककथाएं हिन्दी में हैं।

भोजपुरी ग्राम्य गीत—डब्ल्यू. जी. आर्चर तथा संकटा प्रसाद, मुद्रक पटना ला प्रेस, पटना। प्राप्ति स्थान, बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना। सन् १९४३ ई० पृ० सं० २१० मू० ४ रु०।

भोजपुरी ग्राम्यगीत, प्रथम भाग—कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९४३ ई० पृ० सं० ३९८ मू० ४-८० रु०।

भोजपुरी ग्राम्य गीत, द्वि० भाग—रचयिता और प्रकाशक कृष्णदेव उपा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, सन् १९४८ ई० (सं० २००५ वि०) पृ० सं० ५४४, मू० ११ रु०।

भोजपुरी लोकगीतों में करुण रस—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', विद्यावाचस्पति, प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। सन् १९४४ ई० पृ० ४९६ मू० ६ रु०।

लालच जीव के जवाल—(भोजपुरी लोककथा एवं संग्रह) जगदीश भगवती प्रकाश शास्त्री, पुस्तक भंडार पटना सं० १९५५ ई० पृ० सं० ११२ मू० १-१२-आना ०।

भोजपुरी पहेलियाँ—डा० श्रीधर मिश्र, प्र० भोजपुरी समाज, बम्बई द्वारा, मेडिया एजेन्सी। प्रकाशन काल १९६६, पृ० सं० ४४ मू० १ रु० ५० पैसा वितरक, जनता ग्रन्थालय। कल्याणी क्लबरोड, मुजफ्फरपुर।

कहावत कोश—सं० डा० भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र 'माधव', एवं विक्रमादित्य मिश्र। प्र० बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, प्र० का० १९६५ ई०, पृ० ८४८। मू० १५ रु०।

उत्तर प्रदेश के लोकगीत—प्र० सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ। प्र० का० १९५९ पृ० सं० २५० मू० २ रु०।

रेखा चित्र

सुरतिया ना बिसरे—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' प्र० भोजपुरी साहित्य परिषद १ गोलमुरी बाजार, जमशेदपुर-३, पृ० सं० १०० प्र० का० १९६३ मू० १ रु०।

चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ भाग—१—भोज० गद्य) मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध', (चतुरी चाचा) मेसर्स शर्मा ब्रदर्स, १३२ लूकरगंज इलाहाबाद। प्र० का० १९५७ ई० पृ० सं० २६३ मू० ४ रु०।

चतुरी चाचा की चटपटी चिठ्ठियाँ, भाग—२—(भोज० गद्य) मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध', (चतुरी चाचा) मेसर्स शर्मा ब्रदर्स, १३२ लूकरगंज इलाहाबाद। प्र० का० १९५७ पृ० सं० २६३ मू० ४ रु०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भोजपुरी संगम—(भोज० गद्य-पद्य संग्रह) सं० चन्द्रभूषण सिन्हा। प्र० भोजपुरी साहित्य परिषद, १ गोलमुरी बाजार जमशेदपुर--३। प्राप्ति स्थान डा० बचन पाठक 'सलिल' वीमेन्स कालेज, जमशेदपुर प्र० का० १९६१, पृ० सं० ८८ मू० १ रु०।

कोश

कृषिकोश कहावत कोश—प्र० खंड।सं० स्व० डा० विश्वनाथ प्रसाद, सं० ऋषिदेव शास्त्री, राधा वल्लभ शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना। प्र० का० १९५९ ई० पृ० स० १४५ मू० ३ रु० अन्य भाषा के साथ भोजपुरी

भोजपुरी भाषा का शब्दकोश—(भोजपुरी हिन्दी) एल, सेन्ट जोसेफ मिशन हाउस, मोतीहारी। प्र० का० १९४० पृ० सं० २८ मू० ५० पैसे।

कहावत कोश—सं० डा० भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र 'माधव' एवं विक्रमादित्य मिश्र, प्र० राष्ट्रभाषा परिषद बिहार पटना। प्र० काल १९६५ ई० पृ० सं० ८३२, मू० १५ रु० (क्षेत्रीय भाषाओं का कहावत संग्रह)

धान के उन्नत खेती—कृषि प्रयोग। गंगाराम वैद्य प्र० पीरो-शाहाबाद प्र० का० १९६६ मू० ६५ पैसा।

भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे—(एक समीक्षात्मक प्रबन्ध), डा० भुवनेश्वर तिवारी 'बेसुध', (चतुरी चाचा) प्र० का० १९७० नवम्बर, प्रकाशक हिन्दी परिषद् आशापुर, चित्तबड़ा गांव, बलिया पृ० सं०-डबल डिमाई साइज २४८, मू० रेक्सीन की बढ़िया जिल्द सहित, ११ रुपये मात्र।

फोकट में सैर—(यात्रा विवरण) सं० डा० सत्यदेव ओझा, प्र० भोजपुरी साहित्य परिषद १ गोलमुरी बाजार जमशेदपुर-३, प्र० का० १९६७ पृ० सं० १०० मू० १ रु०।

रामेसर धाम यात्रा—सांवलिया बिहारी लाल वर्मा, समाज शिक्षा बोर्ड बिहार, पटना। प्रकाशन काल १९६१ पृ० ६४ मू० ४४ पै०।

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी साहित्य की पत्र-पत्रिकायें

भोजपुरी (साप्ताहिक)—सम्पादक, अखोरी महेन्द्र कुमार वर्मा, १२६ चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता। यह पत्र हिन्दी का था। इसमें भोजपुरी के भी कुछ लेख छपते रहे।

भोजपुरी (त्रैमासिक)—सं० महेन्द्र शास्त्री। संचालक, गिरीश तिवारी, प्रबन्ध सम्पादक, मंगलेश्वर प्र० ना० सिंह, प्रथमांक बरसात सन् १९४८ भोजपुरी कार्यालय, कदमकुँआ पटना-३। पृ० सं० ६४ वार्षिक शुल्क पाँच रुपया। एकही अंक निकला।

भोजपुरी (मासिक)—सं० रघुवंश नारायण सिंह, भोजपुरी कार्यालय, आरा, प्रथमांक अगस्त १९५२ ई० पृ० सं० ४०। वार्षिक शुल्क पाँच रुपया। लोक साहित्य विशेषांक १९५३ में प्रकाशित। १९५५ में स्थगित होकर सन् १९६२ ई० में पुनः प्रकाशित, बाद में स्थगित।

अँजोर (त्रैमासिक)—सं० पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय। स० सं० अविनाश चन्द्र विद्यार्थी। प्र० भोजपुरी परिवार पटना—३ सालिमपुर अहरा। प्रथम अंक १९६० पृ० सं० ४० वार्षिक शुल्क ४ रु० इस साल प्रकाशन काल का ११ वाँ वर्ष।

गाँवघर (पाक्षिक)—सं० भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'। 'गाँवघर' कार्यालय, महादेवा, आरा, प्रथम अंक अक्टूबर १९६० ई० पृ० सं० २० वार्षिक शुल्क पाँच रुपया। पत्रिका का प्रकाशन अभी स्थगित।

भोजपुरी समाचार (साप्ताहिक)—सं० जयदारी। प्र० प्रोग्रेसिव फेडरेशन आफ इण्डिया, एक्जिबिशन रोड, पटना। कार्यालय ओपियम फैक्टरी के पास गाजीपुर से प्रकाशित। प्रथम अंक १ मार्च १९६५। बाद में मोतीहारी से दैनिक के रूप में। प्रकाशन स्थगित।

माटी के बोली (मासिक)—सं० सतीश्वर सहाय वर्मा, विश्वनाथ प्रसाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नवीगंज, छारा। प्रथम अंक १९६४ ई० पृ० सं० ३६ वार्षिक शुल्क पांच रु०

भोजपुरी कहानियाँ (मासिक)—सं० डा० स्वामी नाथ सिंह, अब डा० रामबली पाण्डेय। प्रका० भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी, प्रथम अंक अक्टूबर १९६४ ई० पृ० सं० ४०। वार्षिक शुल्क ५ रु०।

चतुर्मुखी पत्रिका (त्रैमासिक)—सं० श्री कुलदीप नारायण सिंह 'झड़प', सिकन्दरपुर, बलिया। पृ० सं० ६२ वार्षिक शुल्क २ रुपया।

हिलोर (मासिक)—डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' स० सं० देवकुमार मिश्र 'अलमस्त'। प्र० देववाणी शोध मन्दिर, आरा, प्र० का० १९६९ पृ० सं० ६४ वार्षिक शुल्क पांच रुपया। दो तीन अंक निकलकर स्थगित।

भोजपुरी समाज (मासिक)—भोलानाथ सिंह, प्र० भोजपुरी समाज, परासियाँ, जि० छिन्दवाड़ा, (मध्यप्रदेश), वार्षिक शुल्क १० रु०। दो तीन अंक निकल कर स्थगित।

भोजपुरी जनपद (मासिक)—सम्पादक, संचालक राधा मोहन 'राधेश' प्र० भोजपुरी साहित्य मंदिर २७।९८ जगतगंज, वाराणसी। प्र० का० १९६८ वार्षिक शुल्क पांच रुपया।

काशी से प्रकाशित 'दैनिक आज'—में भी भोजपुरी के लेख, कविता निबन्ध छपते रहे।

वार्त्तिकी—(मोतीहारी) से प्रकाशित हिन्दी और भोजपुरी के सम्मिलित पत्रिका सं० तारकेश्वर प्रसाद। प्र० साहित्य एवं संस्कृति विभाग, नवयुवक पुस्तकालय, मोतीहारी।

लुकार (टाइप पत्रिका)—सं० डा० बच्चन पाठक 'सलिल' इत्यादि। प्र० भोजपुरी परिषद जमशेदपुर, गुलमुरी बाजार १।

कृषक (साप्ताहिक)—अवध बिहारी सुमन (अब दण्डी स्वामी विमला नन्द सरस्वती) प्र० का० १९४९ बक्सर शाहाबाद २ वर्ष तक निकला।

भोजपुरी साहित्य (मासिक)—सं० डा० जितराम पाठक, आरा प्र०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी कार्यालय, प्रोफेसर कालोनी आरा प्र० का० १९६५ पृ० सं० ५६ वार्षिक शुल्क पांच रुपया प्रकाशन अभी स्थगित।

भोजपुरी वार्ता (पाक्षिक)—सं० आचार्य प्रतापादित्य, सह-सम्पादक कपिलदेव, अरविन्द, अ.वास, बेतिया हाता, गोरखपुर। पृ० सं० ४। मू० १० पैसा फी अंक। (स्थगित)

भोजपुरी वार्ता (अर्द्ध साप्ताहिक)—सम्पादक आचार्य विद्यार्थी। सह-सम्पादक देवदत्त जी, स्थगित।

धरती (त्रैमासिक)—सं० मदन मोहन सिन्हा 'मनुज'। प्र० धरती कार्यालय, लूकरगंज, प्रयाग। प्र० का० १९५५। पृ० सं० १६ मू० २ आने।

हमार बोल—सम्पादक ब्रजेन्द्र भारती। प्र० भोजपुरी सेवा मंडल, १४ एलगिन रोड, इलाहाबाद। प्र० का० १९६४ ई० पृ० सं० ३२ स्थगित।

पुरवैया—(भोजपुरी भाषा साहित्य और संस्कृति के त्रैमासिक पत्रिका) सम्पादक, रामवली पाण्डेय। प्र० का० २०२६ प्र० भोजपुरी संसद, जगतगंज वाराणसी। पृ० सं० ७६ मू० वार्षिक ८ रुपया।

भोजपुरी लोक साहित्य—(भोजपुरी भाषा साहित्य, और संस्कृति के तिमाही पत्रिका) प्र० सं० कृष्णदेव उपाध्याय, स० राधा मोहन 'राधेश' सालाना शुल्क चार रुपये। प्र० भोजपुरी साहित्य मन्दिर २७।९८ जगतगंज, वाराणसी। कोई अंक अभी देखने को नहीं मिला है।

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्य पत्रपत्रिकाएँ जिनमें भोजपुरी संबंधी लेख प्रकाशित हुए

—पाण्डेय समीर कुमार सहाय

पत्र-पत्रिकाएँ	तिथि	लेख और लेखक
अजन्ता— (हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	सितम्बर १९५५	भोजपुरी लोक गीत-सोहर, ले०-उमापति राय चन्देल
अवन्तिका— अजन्ता प्रेस पटना	मार्च १९५५,	लोक साहित्य और दर्शन
अवन्तिका— अजन्ता प्रेस पटना	सितम्बर १९५५	भोजपुरी लोकगीतों में विनोद ले० गोपाल राय
आजकल— पब्लिकेशन्स डिवीजन, सूचना विभाग दिल्ली,	वार्षिकांक १९४८	भोजपुरी भाषा और साहित्य ले० डा० उदय नारायण तिवारी
कमला— भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी	जून १९४१	ग्रामगीतों के विषय में ले० राज किशोर सिंह
"	फरवरी १९५०	हमारा लोक साहित्य, लोकगीत डा० श्यामाचरण दूबे
"	अप्रल १९५०	हमारा लोक साहित्य लोकगीत ले०—श्यामाचरण दूबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पत्र-पत्रिकाएं	तिथि	लेख और लेखक
कल्पना—	जून १९५०	,, ,,
,,	अगस्त १९५४	लोकगीतों में करुणा का विस्तार डा० श्यामाचरण दूबे
,,	सितम्बर १९५४	लोकगीतों में करुणा का विस्तार वीरेन्द्र मोहन रतूडी
किशोर—	अप्रैल-मई १९४४	कालीदास के भोजपुरी मुहावरे राम दहिन मिश्र
ग्राम सेवक— किताब घर पटना	मार्च १९५५	भोजपुरी में विवाह के गीत बनारसी प्रसाद भोजपुरी
ग्राम सेवक—	सितम्बर १९५५	दक्षिण विहार की लोकोक्तियाँ उमेश विद्यार्थी
जनपद— हिन्दी जनपदीय काशी	कार्तिक २००६,	ग्राम साहित्य राम नरेश त्रिपाठी
,,	,,	भोजपुरी के सम्बन्ध तथा सह सम्बन्ध वाचक, सर्व नाम के रूपों की व्युत्पत्ति उदय नाराय तिवारी
,,	,,	,, बैल सम्बन्धी कुछ शब्द हरिहर प्रसाद गुप्त
,,	,,	भोजपुरी लोकगीत ले०-कृष्णदेव उपाध्याय
,,	,,	जनपदीय आन्दोलन ले०-जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पत्र-पत्रिकाएं	तिथि	लेख और लेखक
"	"	लोक साहित्य का अध्ययन हजारी प्रसाद द्विवेदी
"	"	भोजपुरी मालवी, बुन्देलखंडी और बघेली, जनपदीय सार सूचनाएं ।
"	माघ ,२००६	भोजपुरी लोक गीतों में गृह-निर्माण कला गणेश चौबे
"	"	हिन्दी साहित्य के इतिहास में लोकगीत की भूमिका नामवर सिंह
"	वैशाख २०१०	बिसराम के बिरहे परमेश्वरी लाल गुप्त और मुखराम सिंह
"	"	भोजपुरी लोकगीतों में चित्रकला गणेश चौबे
"	कार्तिक २०१०	भोजपुरी साहित्य का अध्ययन डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी
"	"	भोजपुरी की बोलियां या विभाषाएं डा० उदयनारायण तिवारी
जीवन साहित्य— सस्ता साहित्य मंडल नयी दिल्ली	दिसम्बर १९५२	हमारी लोककथाएं श्रीमती आदर्श कुमारी
न्दी—	अप्रैल १९४८	बिहार के कुछ लोकगीत राजेन्द्र प्रसाद

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पत्र-पत्रिकाएं	तिथि	लेख और लेखक
नई धारा—	नवम्बर १९४९	भोजपुरी लोकगीतों में रस, छन्द और माधुर्य सुरेश प्रसाद गुप्त
नया समाज नेताजी सुभाष रोड कलकत्ता	जून १९५२	लोकगीत और बिरहे का संग्रह विश्व मोहन सिन्हा
,,	नवम्बर १९४९	लोक साहित्य और गीत रामइकबाल सिंह 'राकेश'
,,	जून १९५०	आदि हिन्दी का जन साहित्य राहुल सांस्कृत्यायन
,,	अक्तूबर १९५०	लोक-कला की परम्परा रामइकबाल सिंह राकेश
,,	,,	लोकगीतों की समाजिक पृष्ठभूमि देवेन्द्र सत्यार्थी
,,	,,	लोक नृत्य और संस्कृति देवी लाल सामर
नागरी प्रपत्रिका	कार्तिक चैत्र २००५	भोजपुरी का नामकरण डा० उदयनारायण तिवारी
बिहार—	फरवरी १९५१	बिहार के लोक नृत्य श्री कान्त गोविन्द
,,	मार्च १९५१	बिहार के वैवाहिक गीतों का मनोवैज्ञानिक आधार रामजी लाल वर्मा
भारती—	अप्रैल १९५५	बिहार के लोकगीत श्री झा जी

भोजपुरी पत्रों में प्रकाशित लेखोंकी सूची यहां नहीं दी जा रही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भोजपुरी पर आंग्ल-भाषा में लिखित ग्रन्थों और निबन्धों की सूची

—हरिश्चन्द्र प्रसाद, बी० ए०

लोकवार्तीय पत्रिका 'फॉकलोर' (कलकत्ता) के लिए जब मैं बिहारी जीवन, भाषा और साहित्य सम्बन्धी प्रकाशित ग्रन्थों और निबन्धों की सूची तैयार कर रहा था, कि 'अँजोर' पटना के सह सम्पादक पं० गणेश चौबे ने प्रस्ताव रखा था कि इस सूची के साथ ही मैं भोजपुरी पर आंग्लभाषा में अब तक प्रकाशित ग्रन्थों और निबन्धों की एक सूची भी तैयार कर दूँ। किन्तु, जब मैंने अपनी सीमित साधनों की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करते हुए अपनी असमर्थता प्रकट की तो उन्होंने मुझे हर सम्भव सहायता देने का आश्वासन दिया और उन्होंने वैसा किया भी। परिणामस्वरूप यह सूची आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

सब होते हुए भी मैं यह दावा नहीं कर सकता कि यह सूची परिपूर्ण है। सम्भव है कि कुछ वरिष्ठ लेखकों और अनुसंधायकों की रचनाएं इस सूची में नहीं सम्मिलित हो पायी हों। सुधी पाठक इसके लिए क्षमा करेंगे। इसके पीछे मेरा कोई दुर्भाव नहीं है, वरन् मेरे वह अल्प ज्ञान का द्योतक है। फिर भी पाठकों तथा ग्रन्थकारों से मेरा नम्र निवेदन है कि यदि उन्हें इस सम्बन्ध में कोई जानकारी हो तो कृपया मुझे सूचित करेंगे। मैं उन्हें उनके नामोल्लेख के साथ पूरक सूची में सादर सम्मिलित कर लूँगा।

इस प्रसंग में पं० राम गरीब चौबे की सेवायें भुलाई नहीं जा सकतीं। वे वाराणसी के पास किसी ग्राम के निवासी थे। उन्होंने विलियम क्रूक को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उनके संकलन सम्पादन कार्य में बड़ी सहायता की थी और स्वयं भी कई निबंधों की रचना की थी। कहते हैं, वे निबन्ध 'इन्डियन एंटिक्वेरी' और 'नार्थ इंडियन नोट्स ऐन्ड क्वेरीज' में प्रकाशित हैं। किन्तु दुर्भाग्यवश उनकी एक भी रचना मुझे उपलब्ध नहीं हो सकी है।

प्रस्तुत सूची लेखक नाम वर्ण-क्रमानुसार तैयार की गई है। इसमें जितनी पत्र-पत्रिकाओं के नाम आये हैं, उनमें से अधिकतर के संक्षेपाक्षर ही दिये गये हैं : पाठक कृपया इन संक्षेपाक्षरों का अर्थ निम्नलिखित रूप से ग्रहण करें :—

(१) ई० ए०	—इस्टर्न एन्थ्रोपोलॉजिस्ट, लखनऊ
(२) एन० आई० एन० ऐएड क्यू०	—नार्थ इंडियन नोट्स ऐण्ड क्वेरीज
(३) आई० ए०	—इंडियन ऐंटिक्वेरी, कलकत्ता
(४) जे० आर० ए० एस० बी	—जर्नल ऑफ रोआयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल कलकत्ता।
(५) आई० एफ०	—इंडियन फॉकलोर, कलकत्ता
(६) एफ० एल०	—फॉकलोर कलकत्ता
(७) जे० बि० ओ० आर० एस०	—जर्नल ऑफ बिहार ऐण्ड उड़ीसा —रिसर्च सोसाइटी, पटना
(८) एम० आई० आई०	—मैन इन इन्डिया, रांची
(९) जे० ए० एस० बी०	—जर्नल ऑफ ऐन्थ्रोपॉलॉजिकल सोसाइटी ऑफ् बम्बई

अन्त में मैं उन सभी सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मुझे सहायता मिली है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोजपुरी ग्रन्थ-सूची

क्रिश्चियन, जॉन—

'बिहार प्रोवर्स', लन्दन केगन, पॉल, ट्रेंच, ट्रबनर एण्ड कों०, १८६१ ई०। इस ग्रन्थ की सारी कहावतें विषय क्रमानुसार वर्गीकृत तथा सुनियोजित हैं। टिप्पणी सहित इनका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है तथा कथाएँ भी दी गई है जिनपर ये आधारित हैं। कुल मिलाकर इनमें १६ लोक कथाएँ संगृहीत हैं। बड़ी संख्या में भोजपुरी कहावतें पाई जाती हैं।

केलॉग, एस० एच०—

'ए० ग्रामर ऑफ दि हिन्दी लैंग्वेजेज', रॉटलेज एन्ड केगन पॉल लि०, ब्रोडवे हाउस, ६८-७४ कारटरलेन, लन्दन, प्र० सं०—१८७५, द्वि० सं० १८९३ पुनर्मुद्रण—१९५५, पृ० सं० ५८४। इस ग्रन्थ में राजपुताना, कुमाऊँ, अवध, रीवा, भोजपुर, मगध, मिथिला आदि की बोलियों के साथ ही उनकी व्युत्पत्ति सम्बन्धी अनेक टिप्पणियाँ दी गयी हैं।

कैम्पवेल, जी०

'स्पेसिमेन ऑफ लैंग्वेएजेज आफ इन्डिया', कलकत्ता, जिल्द—४ १८७५। इस ग्रन्थ में भोजपुरी के अनेक नमूने दिये गये हैं।

ग्रियर्सन, जी० ए०

(क) 'सेवेन ग्रामर्स ऑफ दि डायलेक्टस एण्ड सब डायलेक्टस ऑफ बिहारी लैंग्वेजेज: भाग—२; भोजपुरी डायलेक्टस, ऑफ शाहाबाद, सारन, चम्पारण, नार्थ मुजफ्फरपुर एण्ड इस्टर्न पोरशन ऑफ एन० डब्ल्यू० पी० पी० १८८४, कलकत्ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दि बंगाल सेक्रेटरियट प्रेस, १८८४, पृ० सं० ११०। स० ग्रन्थ में भोजपुरी के गीत के कई नमूने भी संगृहीत होते हैं।

(ख 'बिहार पिजेंट लाइफ',—ट्रूबनड एण्ड कम्पनी लन्दन तथा दि बंगाल सेक्रेटरियट प्रेस, कलकत्ता, १-८५, पृ० सं० ४३१+१५५+७ एक मानचित्र तथा संग्रहकर्ता द्वारा लिए गये अनेक चित्र। इस चित्र में अनेक भोजपुरी क्षेत्र के किसानों द्वारा प्रयुक्त होने वाले शब्दों का विशाल संग्रह है। इसका द्वितीय संस्करण सन् १९२५ ई० में अधीक्षक सचिवालय, मुद्रणालय, बिहार और उड़ीसा, पटना द्वारा प्रकाशित था।

(ग) 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया'—जिल्द ५, भाग २, कलकत्ता, दि बंगाल सेक्रेटारियट प्रेस, १९०३। इस ग्रन्थ के पृष्ठ ४०-५३ पर भोजपुरी के बिभिन्न रूपों की व्याख्या की है और पृष्ठ १८६-३२३ पर नमूने दिये गये हैं।

ग्रियर्सन, जी. तथा हॉर्नले, ए. एफ. आर.—

'ए कम्पेरेटिव डिक्शनरी आफ बिहार लेंग्वेजेज'—इस ग्रन्थ के केवल प्रथम दो भाग क्रमशः सन् १८८९ ई० में प्रकाशित हुए थे। इसमें भोजपुरी के बहुत से शब्द संगृहीत है।

जॉसिफ, एल० ऐण्ट—

भोजपुरी शब्दकोश—मोतीहारी, मिशन हाउस, पृ० सं० २८। इस ग्रन्थ के मोतीहारी के पास बोले जाने वाले भोजपुरी के वे डेढ़ हजार शब्दों का संग्रह किया गया है तथा उनके अंगरेजी पर्याय दिये हैं। पाठकों की सुविधा के लिए इसमें संग्रहकर्त्ता ने आधी पुस्तक में भोजपुरी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय दिये हैं और आधी में अंगरेजी शब्दों के भोजपुरी पर्याय।

फैलन, एस. डब्ल्यू., आर. सी. तथा फकीरचन्द, लाला—

'ए डिक्सनरी आफ हिन्दुस्तानी प्रोवर्ब्स'—लन्दन ट्रूबनर ऐण्ड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

को० तथा बनारस, ई० जे० लाजरस एण्ड क०, १८८६ ई०। यह हिन्दुस्तानी कहावतों का विशाल संग्रह है। इसमें मूल कहावतों के अंगरेजी अनुवाद के साथ ही समानान्तर अंगरेजी कहावतें भी, दी गई हैं। इसमें भोजपुरी की बहुत सी कहावतें संगृहीत हैं।

बनर्जी ए.

'फॉकटेल्स ऑफ बिहार—पटना पुस्तक भंडार, पृ० सं० १२३। विद्वान लेखक ने इसमें भोजपुरी की १० लोककथाओं को अंगरेजी में प्रकाशित कराया है। यह ग्रन्थ मुख्यतः विद्यार्थियों के लिए लिखा गया है।

नवरंगी, पीटर शान्ति—

'ए सिम्पुल सदानी ग्रामर'—राँची से ग्रन्थकार द्वारा प्रकाशित, पृ० सं० १६४। यह ग्रन्थ नागपुरिया बोली का वैज्ञानिक ढंग पर अंगरेजी में लिखित द्वितीय व्याकरण है। इसके पूर्व सन् १८६५ ई० में डा० हिवटली द्वारा लिखित एक व्याकरण प्रकाशित हुआ था। नागपुरिया बोली का रूप दिखाने के लिए पुस्तक के अन्त में एक लोक-कथा उसी बोली में उद्धृत की गई है।

हिवटली, ई. एच—

'नोट्स ऑन दि गनवारी डाइलेक्ट ऑफ लोहरदग्गा, छोटानागपुर'—कलकत्ता, दि बंगाल सेक्रेटारियट प्रेस, १८६६। यह सदानी भाषा का प्रथम व्याकरण है। सन् १६१५ में 'नोट्स आन नागपुरिया हिन्दी' नाम से इसका द्वितीय एवं संशोधित संस्करण प्रकाशित हुआ था। इसमें ३२ पृष्ट हैं और यह तीन भागों में बँटा हुआ है। प्रथम भाग नागपुरिया हिन्दी व्याकरण है तथा द्वितीय एवं तृतीय भाग में क्रमशः नागपुरिया भाषा के उदाहरण तथा नागपुरिया भाषा के तीन वार्तालापों और तीन गीतों के नमूने दिये गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हॉर्नले, ए. एफ. आर—

'ए ग्रामर ऑफ दि ईस्टर्न हिन्दी कामपेयर्ड विथ दि अदर गौडियन लैंग्वेजेज'—लन्दन ट्रबनर एन्ड क०, १८८० पृ० ४०+४१६। इस ग्रन्थ में भाषाओं का एक मानचित्र तथा वर्णमालाओं की एक सूची दी गयी है। इसमें भोजपुरी भाषा का सविस्तार वर्णन है और बनारसी भोजपुरी के कई नमूने दिये गये हैं।

ग्रियर्सन, जी. ए.—

(क) 'सम बिहारी फाक-सॉंग्स'—जे. आर. ए. एस. बी., जिल्द—१६ (१८८४) पृ० सं० १९६—२२२। इसके सात उदाहरणों में कुछ भोजपुरी गीत भी सम्मिलित हैं।

(ख) 'सम भोजपुरी फाक-सॉंग्स'—वही, जिल्द—१८ (१८८६) पृ० सं० २०७।

(ग) 'टू वर्सन आफ् दि सॉंग ऑफ गोपीचन्द'—वही, जिल्द—१७ (१८८५) पृ० सं० ३३-३५। इसमें गोपीचन्द नामकगाथागीत के मगही और भोजपुरी रूप प्रस्तुत किए गए हैं।

(घ)—'दि सॉंग ऑफ् अल्हाज मैरेज'—आई० ए०, जिल्द—१४ (१८८५), है। सं० २०९-८७। इसमें आल्हा के विवाह वाले खण्ड का भोजपुरी अंगरेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित है।

(ङ) 'सेलेक्टेड स्पेसिमेन ऑफ बिहारी लैंग्वेज—दि भोजपुरी डायलेक्ट दि गीत ऑफ् नयका बनजरवा—साइत् श्रिफ्त देर् दायशेन मार-गेन लैंदिशेन गेलेज शाफ्त् १८८६), पृ० सं० ४६८-५०६। इसमें 'नयका बनिजरवा' नामक गाथागीत संकलित है।

चौबे, गणेश—

'करेन कम्पेलिंग राइट्स एंड सॉंग्स इन बिहार'—भारतीय विद्या, जिल्द ६, सं० ९, सितम्बर, १९४५ पृ० सं० १७५-७८।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(ख) 'दि पिकॉक इन भोजपुरी फोक सॉंग्स'—आई० एफ०, जिल्द १, सं०-२ सितम्बर-दिसम्बर, १६५६, पृ० स० ५८-५६।

(ग) 'द थारू सॉंग्स'—वही, जिल्द २, सं० १, अप्रील-जून, १६५७ पृ० सं० ५२-५५। इस लेख में चम्पारन के थारुओं के पाँच लोकगीत के अंग्रेजी रूपान्तर दिये गए हैं।

(घ) 'ऐन यूनिक ऑरगेनेजेशन ऑफ शैंव पिलग्रिमस'—वही अप्रोल-जून, १६५८ पृ०सं० ४६-५८। इस लेख में कवारथुओं के ६ भोजपुरी गीतों के मूल रूप अंगरेजी अनुवाद सहित दिये गये हैं।

(ङ) 'दि ढांगर सॉंग्स'—वहीं, अक्टूबर-दिसम्बर, १६५८, पृ० सं० ८२-२५ चम्पारन में बसने वाली ढांगर जाति के द्वारा गाये जाने वाले १२ गीत मूल रूप में अंगरेजी अनुवाद सहित दिये गये हैं।

(च) चैंट्स टू इनिसियेट काउज टु प्लाउ'—२५० एल, जिल्द १, सं० ३, मई-जून, १६६०, पृ० सं० १६१-६४। इसमें छः गीत मूल रूप में दिये गए हैं।

(छ) 'रेन कम्पेलिंग एण्ड स्टॉपिंग राइट्स इन बिहार'—वही जिल्द-३, सं० १० अक्तूबर १६६२। इस लेख में १६ भोजपुरी लोकगीतों के मूल रूप अगरेजी अनुवाद सहित दिये गए हैं। सन् १६६३ ई० में यह लेख 'फॉकलोर' के सम्पादक श्री एस० सेनगुप्ता द्वारा सम्पादित ग्रन्थ 'रेन इन इंडियन लाइफ एण्ड लोर' के पृ० सं० ३३-४३ पर कलकत्ते से प्रकाशित हुआ।

तिवारी, उदयनारायण—

(क) 'ए डायलेक्ट ऑफ् भोजपुरी'—जे० बी० ओ० आर० एस० जिल्द-२० सं० ३-४, जुलाई दिसम्बर, १६३४, पृ० सं० १-३२, जिल्द-२१ जनवरी-मार्च १६३५, पृ० सं० ३३-५६, जिल्द-२४, सं० ३ जुलाई-सितम्बर १६३५। इस लेख में बलिया जिले में बोली जाने वाली भोजपुरी को आधार मान कर भोजपुरी का व्याकरण लिखा गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(ख) पिरिया: ए क्यूरियस फॉक फेस्टिवल ऑफ भोजपुरी विमेन'—एम० आई० आई०, जिल्द-२६, सं०-३-४, जुलाई—दिसम्बर, १६४६ पृ० सं० १७५-८४।

दत्त, गिरीन्द्रनाथ—

(क) 'नोटस ऑन वर्नाकुलर डायलेक्टस् स्पोकेन इन दि डिस्ट्रिक्ट ऑफ सारन'—जे० आर० ए० बी०, जिल्द—६६, सं० ३ (१८६७) पृ० सं०-१६४-२१२।

(ख) 'फर्दर नोट्स ऑन दि भोजपुरी डायलेक्टस स्पोकेन इन सारन'—वहीं, जिल्द—७३, सं०-३ (१६०४)।

प्रसाद, तारकेश्वर—

(क) 'हाउ फिशरमेन वासिंप गॉडेस काली'—आई० एफ० अक्तूबर दिसम्बर, १६५८, पृ० सं० ७०-७२। इस लेख में एक गाथागीत का अँगरेजी रूपान्तर दिया गया है।

(ख) 'फॉक सॉंग्स ऑफ दि पिपुल ऑफ इंडिया: फॉक-सॉंग्स ऑफ बिहार: भोजपुरी फॉक-सॉंग्स'—लोकयान (कलकत्ता, जिल्द-२ सं० २, अप्रैल, १६६२, पृ० सं०-४०-४२। इसमें भोजपुरी क्षेत्र में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने ५७ गीतों का मूल एवं अंगरेजी अनुवाद सहित संगृहीत हैं। किन्तु, ये अनुवाद प्रयास मात्र हैं।

फ्रेजर, एच—

'फॉकलोर फ्रॉम इस्टर्न गोरखपुर'—जे० ए० एस० बी०, जिल्द-५२ सं०-३ (१८८३), पृ० सं० १-३२। इसमें १२ गीत मूल रूप में देवनागरी लिपि में दिये गये हैं तथा इनका अनुवाद और विस्तृत टिप्पणियाँ एफ० एच० फिशर, डी० ए० ग्रियर्सन एवं स्वयं फ्रेजर द्वारा लिखी गई हैं।

बिम्स, जे.—

'नोट्स ऑफ दि भोजपुरी डायलेक्ट आफ हिन्दी ऐज स्पोकेन इन वेस्टर्न बिहार'—वही, जिल्द-१ (विशेषांक), १८६८, पृ० सं० ५८३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिश्र, श्रीधर—

'कुँअर सिंह इन फाक-सॉंग्स'—एफ० एल, जिल्द-४ सं० १, जनवरी, १९६३, पृ० सं० १५-२०। इस लेख में छः भोजपुरी गीत अंगरेजी अनुवाद सहित दिए गए हैं।

मित्रा, एस. सी.—

(क) 'आन दि हरपरउरी, आर दि बिहारी विमेनस सेरिमनी फार प्रोडयूसिंग रेन'—जे० आर० ए० एस० बी०, १८९६।

(ख) 'रिडल्स करेंट इन बिहार'—वही, जिल्द—७० सं ३, १९०१।

(ग) 'बगाली एण्ड बिहारी फाकलोर एबाउट बर्डस'—वही, जिल्द-६७, सं० ३ (१८९८) तथा जिल्द-६८, सं० ३(१८९९)।

(घ) 'एकुमुलेशन ड्रोल एण्ड राइम फ्राम बिहार'—वही, जिल्द-७०, सं० ३ (१९०१)।

(ङ) 'ए नोट आन दि कल्ट आफ दि अग्रिकल्चरल डिटिज सामा एण्ड चाको इन नार्थ बिहार'—वहीं, १९३४।

(च) 'आन दि वर्सिप आफ प्लाउ इन नार्थ बिहार'—१८३४।

(छ) 'बिहारी लाइफ इन बिहारी रिडल्स'—जे० ए० एस० (बम्बई), जिल्द—७, पृ०-२१-५०।

(ज) 'फाकलोर आफ हेडलेस मैन इन नार्थ बिहार'—वहीं, जिल्द १०, सं० ६।

(झ) 'सम बिहारी मन्त्राज आर इनकैंटेशनस'—वहीं, जिल्द—६ (१९१२), पृ०-५००—२३। इसमें झाड़फूँक सम्बन्धी १२ मन्त्र दिए गए हैं।

(ञ) 'आन सम हिन्दी फाक-सॉंग्स फ्राम दि डिस्ट्रिक्ट आफ सारन'—वहीं-जिल्द १२ (१९२०), पृ० सं०-७-३१।

(ट) 'ए फाक टेल आफ न्यू टाइप फ्राम नर्थ बिहार'—जे० बी० ओ० आर० एस, जिल्द— ३, भाग—३, सितम्बर, १९१७, पृ० सं०-३७८-४०५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(ठ) 'आन बिहरी चार्म फार रेन-कन्फेलिंग एण्ड रेन स्टापिंग'—वहीं, जिल्द-६, भाग-३, सितम्बर, १९२०, पृ० सं०-३९३-४२३।

(ड) 'स्टडिज इन दी फाकलोर आफ् नार्थ बिहार—वहीं, जिल्द-१८ भाग २-३, जून-सितम्बर, १९३१, पृ० सं० १८९-९५। इसमें 'दि इनडिजेंट ब्राह्मण ऐण्ड दि हेल्पलेस वर्ड्स' तथा 'दि मैजिक फिडल दैट वैवेल्ड अबाउट दि राजाज सिकरेट' नामक दो कथाएँ संगृहित हैं।

सिंह, दुर्गा शंकर प्रसाद —

(ढ) कुंअर सिंह इन भोजपुरी फाक-साँग्स ऐण्ड डान्स'—एफ० एल०, जिल्द-५, सं० १०, अक्टूबर, १९६४, पृ० सं०-३७८-९८।

उपाध्याय कृष्णदेव—

'भोजपुरी फाकलोर एण्ड बैलेड्स'—ई० ए० (लखनऊ), जिल्द ३ सं० ४, जून, १९५० पृ० सं० १३७-५०।

क्रूक, डब्ल्यू.

(क) 'शार्ट साँग्स मेनली फ्रोम मिरजापुर'—एन० अ.ई० एन० ऐण्ड क्यू०, जिल्द १ (१८७१), पृ० सं० १०७, १४५, १४४, १६१, जिल्द २ (१८९२) पृ० सं० ५३, ७४, ७६, ८९-९१, १०९, १११, १२५ २६, १२९, १४३, जिल्द ३ (१८९३) पृ० सं० ५३, १४३, जिल्द ४ (१८९४) पृ० सं० १६० जिल्द ५ (१८९५) पृ० सं० १०, १९८।

(ख) 'कर्मा फ्रमटा'—वहीं, जिल्द १ (१८९१), पृ० सं० १५९-६०। यह छोटानागपुर की सीमा पर बसनेवाली एक जाति कोरवा का शिकार-गीत हैं।

(ग) 'मैरेज साँग्स इन नर्दन इन्डिया'—आई० ए०, जिल्द ५५ (१९२६), पृ० सं० ८१-८। इस लेख में अन्य जिलों के साथ ही मिरजापुर जिले में आठ गीत हैं।

• उपाध्याय, कृष्ण देव

(क) 'ऐन इण्ट्रोडक्सन टू भोजपुरी फाक-साँग्स एण्ड बैलेड्स'—एम० एफ० सं० ७ सन् १९६७ ई०, पृ० सं० ८५-८४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(ख) 'भोजपुरी फाकलोर एण्ड बैलेड्स'—आ० एफ०, अप्रील, १६-५६, पृ० सं० ६-१८।

मिश्र, श्रीधर

(क) 'डेपिक्सन आफ कल्चर इन भोजपुरी फाक साँग्स'—एफ० एल०, भाग-१, अंक-१, जनवरी, फरवरी, १६६१, पृ० सं० २३-२८।

(ख) 'एलिमेंट्स आफ कल्चर इन भोजपुरी फाक साँग्स'—वहीं, भाग-४, अंक-१, जनवरी, १६६५, पृ० सं० २८-३६।

(ग) स्टोरी आफ् सोल इन भोजपुरी फाकसाग्स'—आई० एफ० भाग-२, अंक-५, सितम्बर-अक्टूबर, १६५६, पृ० सं० २८६-६३।

मित्र, शरच्चन्द्र

'आन सम हिन्दी फाक-साँग्स फ्राम दि डिस्ट्रिक्ट आफ सारन'—जे० ए० एस० बी० सं०-१२, १६२०, पृ० सं०-७-३१।

सत्यार्थी, देवेन्द्र

'भोजपुरी फाक-साग्स'—दि न्यू रिवियू, सं०-१५, १६४२, पृ० सं०-४६७-४८३।

सिंह, दुर्गा शंकर प्रसाद

(क) 'मिस्टिसिज्म एण्ड हाई पोइटिक एक्सप्रेशन एण्ड आइडिआज इन फाक-साँग्स आफ् भोजपुरी'—एफ० एल०, भाग-३, अंक-७, जुलाई, १६६२, पृ० सं० ३०४-१८।

इसमें भोजपुरी के मूल गीत देवनागरी लिपि में तथा भूमिका अंगरेजी में दिये गये हैं।

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कहानी

बिटुकी भर सेनुर — कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', प्रियंवदा प्रकाशन, झारसुगड़ा (उत्कल) प्र० का० १९६९, पृ० सं० ६७ मूल्य - २रु०

व्रतकथा — भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी, मूल्य - ३ रु०

काव्य

गगन-गुफा — डा० सम्पूर्णानन्द, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, १९६९ मू० - १०.०० । कवि की अन्यभाषा के पदों के साथ भोजपुरी पदों का भी संग्रह ।

नाटक

माटी के दीया घीव के बाती — सतीश्वर सहाय 'सतीश', भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी -२ १९७० ई० मूल्य - २ रु०

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रक : इँकार प्रेस न्यूमार्केट पटना—१

मूल्य : एक रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.